





























































































































































































































































































































































































































































































































































































































































































































































































































































































































































































































































































































































































































































































































































































































































## VII congenital syphilis

Amongst the causes of wasting it is comparatively rare. Syphilitic taint may interfere with nutrition & children with syphilitic taint will improve remarkably when they are put on grey powder.

## VIII. Diseases of lungs.

Such as chronic broncho-pneumonia latent emphysema. The former may be afebrile only a few moist sound or doubtful significance might be detected with the stethoscope which would suggest it.

Careful percussion would detect dullness which would suggest emphysema.

## IX. The other organic cause is conge-heart disease.

The stethoscope would detect murmurs over apex & base—the signs of heart disease. In a few cases heart-disease occurs without murmurs. In some cases—namely in (heart-disease) interferes with nutrition & leads to wasting.

## Complication's

The wasted infants are prone to infections such as boils, abscesses, tuberculosis, B. Coli infections, necrotic enteritis, broncho pneumonia, acidosis, nephritis & idiopathic oedema dehydration—drying of water from the system.

## Prognosis

Or Outlook on life is always

sis Rectal) लेकिन यह रोग . मास तक के बालकों को आम तौर पर नहीं होता है और सूखा रोग इन्ही ६ मास तक के बालकों को होता है—और अगर यह रोग उन्हें होता भी है तो फेफड़ों पेट और ग्रन्थियां (Glands) से पता लग जाता है। राजयत्नमा का खयाल उन्हीं ग्रन्थियों में करना चाहिये जिनमें हाजमें की कोई खराबी ना मालूम होती हो और जहां उसकी गुदाई हवा रत (Temperature) बराबर ब्यावह रहती हो।

## पैदाइशी आनुशक Congenital Syphilis

सूखा रोग के कारणों में से एक यह भी कारण हो सकता है—परन्तु यह आम तौर पर बहुत कम होता है। आनुशक का मादा होने की वजह से ग्रन्थी अपने वजन में तरक्की नहीं कर सकता। जिन ग्रन्थियों में पैदाइश से आनुशकी मादा हो, जो अगर उन्हें ग्रे पाउडर (Grey Powder) दिया जावे तो वह बहुत अच्छी तरक्की करते हैं।

## फेफड़ों के रोग

फेफड़ों की भित्ती में नवाद (Latent emphysema) पड़ जाने से और सांस लेने का न। में खराब हो जाने से (Broncho Pneumonia) भी यह रोग हो जाता है और स्टेथोस्कोप (Stethoscope) की नली द्वारा प्रतीत की जास सकती है।

## दिल का रोग Heart Disease

यह बीमारी स्टेथोस्कोप (Stethoscope) द्वारा प्रतीत हो सकता है। दिवक सा ऊपर और नीचे के हिस्से से उसकी धामी कीसी आवाज सुन-

doubtful even when everything is going on well, a sudden collapse occurs & proves fatal, on the other-hand sudden & spontaneous improvement may occur at any moment even in worst cases. More frequently there is a gradual improvement checked by many relapses improvement occurs rapidly after teeth are out.

### Treatment.

The treatment of a wasting infant requires great patience & resource on the part of physician & nurse. The treatment is both hygienic & dietetic.

### Hygienic.

Fresh air, sunshine, cleanliness, warmth, especially keeping feet & legs warm & are all great aids to success. Good mothering is also important the infant wants plenty of cuddling & amuzzing. Great-care should be taken to see that the wasting infant does not get chilled when being washed. Next comes the important question of feeding.

Feeding is very great importance. Overfeeding does much greater harm than underfeeding. One must not be too eager of increasing weight. Mothers and Nurses are great offenders in this respect.

Once a mother took into her head fatten her 4 months baby too quickly. She started feeding the baby on butter—unknown to other members of the family. The baby

चानी जा सकती है। कभी कभी यह रोग बिना इस आवाज के भी हो जाता है। दिल के रोग खुराक के पाचन में बाधा डालकर सूखा रोग के कारण होते हैं।

### सूखा रोग की और बाधायें Complications

सूखा रोग के बच्चों को छूत के रोग भी हो जाया करते हैं जैसे—कुन्सि, -फोड़े, तपेदिक, आंतों की सूजन (Infective Enteritis) मांस की नली में खराब का रोग (Broncho Pneumonia) जिस्म की सूजन तथा जिस्म में दस्त व क़ै से पानी की कमी होना (Dehydration) इत्यादिक।

### नतीजा (Prognosis)

इस रोग का आराम होना संदेहात्मक होता है मरीज को ठीक चलते २ एकदम कोई ऐसी बाधा हो जाती है जो उसके जीवन को कठिन बना देती है। लेकिन इसके साथ यह भी बात है कि ठीक औपधि के उपलब्ध होने पर खराब से खराब रोगी भी बहुत जल्द आराम होते देखा गया है।

आमतौर पर रोगी धीरे धीरे तरक्की करता है और इसी दरम्यान में उसे कई बाधाओं को भी लांघना पड़ता है। जब पहले दांत निकल आते हैं तो बच्चे को बहुत जल्द ही आराम होना शुरू हो जाता है।

### इलाज—

सूखा रोग से पीड़ित बालकों के इलाज करने वाले और उसकी सेवा शुभ्रुषा करने वालों को

got severe diarrhoea. He was passing 12-13 motions a day—nearly all blood with some mucus. The milk was stopped, the child was starved for one day only (Glucose water 7% was allowed during this starvation period). The diarrhoea abated and the baby gradually recovered. Later his mother confessed to me that she had been feeding him on butter to fatten him.

It is a common and a grave mistake to get the baby to put on weight too quickly, by various devices. This has just the opposite effect and not unoften endangers the life of the baby.

Feeding should be changed reluctantly cautiously. Before starting a new food it is well to clear out the bowels with a small dose of castor oil—half tea spoonful made into emulsion and to stop all food if acute symptoms of intoxication have supervened (Glucose and water being allowed) for a few hours, at most for a day but not for too long as wasted infants do not stand starvation well, for long. Glucose and water for one day, Whey and Barley water next day. Then gradually put on milk too. In case the food is rich in sugar it should not be reduced too rapidly or collapse will occur. Breast milk is the best food in most cases; but in case artificial milk is to be given, one should be selected which is rather poor in fat, rich in carbohydrates and whose protein is in digestible form (that it forms fine curds of casein.

(Nursing) उसकी देख रेख तथा इलाज बहुत इतमीनान और सोच समझकर करना चाहिए।

इलाज में मक्काई और खुराक पर खास ध्यान देना आवश्यक है।

मक्काई—साफ हवा, सूर्यकी रोशनी, जिस्मानी-सफाई, काफ़ी गरमी, मक्खी तथा मच्छरोंसे बचाव हाथ और पैरों का गरम रखना इत्यादिक बालक को अच्छा होने में बहुत मदद देते हैं। मां को खास अहतयान की जरूरत है। बच्चे को जहां तक हो सके खुरा रखन की कोशिश की जाए। सूखा रोग से पीड़ित बालक को निहलाने बक ठंड नहीं लगनी चाहिए।

अब खुराकका सबसे जरूरी सवाल आता है -

**खुराक—**

माताओं तथा देख रेख करने वालों को यह बहुत खयाल होना है कि हमारा बच्चा बहुत जल्द मोटा हो। जिसके परिणामस्वरूप वे उसको बहुत ज्यादा दूध पिलाने लगते हैं। यह बात खास ध्यान रखने वाली है कि बच्चे ज्यादातर खुराक की बहुतायत से बीमार होते हैं नकि कमी की वजह से।

एक दफा एक माता को यह सूझी कि वह अपने चार महीने के बच्चे को खूब मोटा करे। उसने उसे झिपे झिपे मक्खन खिलाना शुरू कर दिया। नतीजा यह हुआ कि बच्चे को दस्त लग गए और दिन में १२-१३ दस्त होने शुरू हो गए और दस्तों में बहुत ज्यादा खून व आंव (mucus) आनी शुरू हो गई-बच्चे का दूध एक रोज के लिए बिलकुल बन्द कर दिया गया सिर्फ ग्लूकोस वाटर (glucose) थोड़ी थोड़ी मिक्चर में

The following two are good digestible.

1. Sweetened condensed milk: 2 drachms—3 ounces of water.

2. Half cream dried milk (Cow & Gate):

One drachm of half cream milk to one ounce of water.

If stools contain excess of fat which indicates severe fat indigestion, the baby should be fed on whey with Mellin's food. If digestion of casein is at fault—by the presence of indigested curds in stool—sterilized peptonized milk 2 gr. to one ounce of milk extract milk—(2 gr. Soda Citras to ounce of milk) or dried milk should prevent it. In less common cases of sugar indigestion and intoxication the so-called protein milk is often very useful.

As to size of feeds and intervals feeds should be smaller, intervals not too large in proportion to wasting and exhaustion that is, more wasted and exhausted the child, the smaller and more frequent feeds should be given 3 hours.

### Drugs.

are not of much use in wasting except to meet certain special indications, such as Colic flatulence etc.

Grey powder does good even if there is no syphilitic taint—possibly by correcting constipation or by stimulating digestive secretions.

Spirits Vinum Gallici is also helpful in cases where there is much exhaustion with subnormal temperature. It is a common custom to anoint wasting

दिया गया दस्त पाने बन्द हो गए और बच्चा धीरे-धीरे ठीक होता गया, अन्त में उसकी मां ने मेरे सामने यह कबूल किया कि वह उसे मोटा करने के लिए मक्खन खिलाती थी।

यह एक आम गलती है कि बच्चों को मोटा करने के लिए बहुत से माधनों का उपयोग किया जाता है इसका मिलकूल उलटा परिणाम होता है और कभी-कभी बालकों की जान तक का खतरा हो जाता है।

खुराक तबदील कर देनी चाहिये और नई खुराक देने से पहिले बच्चे का मेदा थोड़े थोड़े अरंडी के तेल के एमूलशन (castor oil emulsion) से साफ कर लेना चाहिये और हालत खराब मालूम हो तो कुछ घंटों के लिए दूध को रोक देना मुनासिब है। सूखा रोग के बच्चों को एक दिन से ज्यादा भूखा नहीं रखना चाहिये क्योंकि वह इससे ज्यादा बरदाश्त नहीं कर सकत एक दिन केवल ग्लूकोज या जौ के (Glucose or Barle) पानी पर रखने के पश्चात् बच्चे को धीरे-धीरे दूध देना चाहिये।

अगर पहले बच्चे को दूध में ज्यादा बूरा मिलनी रही हो तो इस बूरा को एकदम नहीं घटाना चाहिये वरना नुकसान होता है मां का दूध बच्चे के लिये सर्वोत्तम खुराक है लेकिन अगर बच्चे को ऊपर का दूध देना पड़े तो ऐसा दूध देना चाहिये जिसमें (fat) कमती मिकदार में Carbohydrate ज्यादा मिकदार में और (Protein) ऐसी किस्म का होना चाहिये जो जल्दी हضم हो जाय इस किस्म का दूध अच्छा होता है।

मीठा सुखाया हुआ दूध (Sweet and Co-

babies with codliver oil, but it is a very dirty practice and highly objectionable, the child can hardly obtain any appreciable amount of nourishment by such a method at the most it can help in retaining some degree of heat. Almond Oil would be much less offensive, and could retain that as effective as Codliver Oil, whilst adequate clothing is more effectual than codliver or almond Oil.

### Some hints for mothers in the management of the babies.

1. Breast milk is the best of all milk foods. Artificial feeding should only be resorted to unless mother's milk is insufficient for the baby or mother is too weak to suckle it.

2. Feed the baby regularly every 3-4 hours, nothing should be given in between. It would be much better for mother and the baby's digestion if the last feed were given at 10 P. M. and nothing during the night. The next feed should commence at 4-0 or 5-0 A.M. when the baby awakens. After a few days the baby will sleep quickly and let the mother sleep peacefully too.

3. After each feed the child should be made to lie down for half an hour but not moved about in the arms.

4. Do not keep the baby always in arms, but let it lie on the cot for most

ndense) मांश दूध डेढ़ छटांक पानी में मिला कर या आधे मकरन वाला सुखाया हुआ दूध (Half cream Dried Milk)

६ मांश दूध एक छटांक पानी में मिलाकर अगर दमनों से (Fat) की ज्यादा मात्रा हो तो बच्चों को मेल्लिन्स फूड (Mellins Food) अच्छा रहता है अगर दमनों से कैसिन (Cassein) की ज्यादा मात्रा हो तो दूध में २ रत्ती की छटांक के हिमायसे सोडियम मिटरेट (Soda Citrate) मिला देने से यह शिकायत दूर हो जायगी।

दूध की मिकदार और देने का समय बच्चे की सेहत पर निर्धारित है जितना ज्यादा कमजोर बच्चा हो उतना ही थोड़ा थोड़ा दूध ज्यादा दफा देना चाहिये और जितना मजबूत बच्चा हो उतना ही ज्यादा दूध कमती दफा देना चाहिये आम तौर से कमजोर बच्चों के लिये यह समय दो से तीन घंटे तक का होना चाहिये।

### दवाइयाँ—

सूखा रोग में दवाइयाँ ज्यादा मदद नहीं करती हैं बल्कि यह सूखा रोग की बाधाओं को दूर करने के काम में लाना चाहिये ग्रे पाउडर (Grey Powder) एक बहुत अच्छी दवा है—चाहे बच्चे को आतशकी मादा न भी हो तो भी यह कब्ज को दूर करके और हाजमे को दुरुस्त करके बच्चे को बहुत फायदा पहुंचाती है।

जब बहुत कमजोर और थका हुआ हो तो (Spt. Vinum Gallicii) बच्चों को फायदा पहुंचाती है।

आम तौर पर डाक्टर लोग बच्चों को कोड-लिवर आयल (Cod Liver Oil) सूखा रोग में मालिश करने को बताते हैं यह फजूल बात है क्योंकि यह बहुत बढ़ावा

of the time during the day, otherwise, it will form a habit and would always like to be nursed in the arms, which would be very inconvenient for the mother.

5. Baby's feet should be kept warm and free from dampness especially in cold, damp weather.

6. The baby should not be clothed too heavily as heavy clothes hinder the child's breathing.

7. Avoid the baby catching chill or cold while being washed.

8- Let the child sleep 3-4 hours during the day and let him sleep early at night -7-0 P.M. as an infant requires mostly 2 things eating and sleeping.



होता है। इससे सिर्फ बच्चे की थोड़ी सी गरमी कायम रहती है। बादाम रोगन भी यह काम कर सकता है। और इसमें बू विलकुल नहीं होती और उतनी ही गरमी कायम रखता है परन्तु ठीक वस्त्रों का पहनाना कौ डलिवर आयल ला बादाम रोगन से ज्यादा कायदा करता है।

## माताओं के लिए कुछ हिदायतें

१-माता का दूध सब दूधों से अच्छी सुराक है। ऊपर का दूध सिर्फ उस हा समय देना चाहिये जब मां को दूध कम आता हो या नहीं आता हो और या मां बहुत कमजोर हो।

२-बच्चे को दूध हर ३-४ घंटे के बाद देना चाहिये। आखरी दफा रात को १० बजे दूध देकर फिर सुबह चार पांच बजे से शुरू करना चाहिये। इससे मां और बच्चा दोनों सुखी रहते हैं।

३- दूध पिलाने के बाद आध घंटे तक बच्चे को लेटे रहने देना चाहिये। और गोदी में लेकर विलाना नहीं चाहिये।

४-जहां तक हो सके बच्चे को गोदी की आदत न डालो और पालने में थ खाट पर लेटने दो। वरना आगे जाकर इससे बड़ी दिक्कत होती है।

५-बच्चे के पैरों को गरम रखो। ठंडा और गीला होने से बचाओ। बरसाती हवा और मच्छरों से बचाओ।

६-बच्चे को बहुत भारी और बहुत ज्यादा कपड़े मत पहनाओ। इससे उसकी सांस लेने की क्रिया में बाधा पहुंचती है।

७-निहलाते वक्त खास खयाल रखो कि बच्चे को हवा न लगे।

८-बच्चे को जहां तक हो सोने दो क्योंकि बच्चे की तरक्की के लिये नींद और सुराक को ही ज्यादा जरूरत होती है।

BY YOUR  
**"JIWAN SUDHA"**

AND  
ALL OTHER BEST  
MAGAZINES

*Published all the world over from:-*

**Messrs. J.M. JAINA & Bros.**

*Authorised Agents for:-*

The Publications, of the Government of  
India, the Government of Punjab,  
and the Government of U.P.  
**AGRA & OUDH;**

*Books-Sellers, News Agents & Stationers,*

*Phones:-*

**5064 MORI GATE, DELHI.**

**3496 CANNAUGHT PALACE, DELHI**

# IF YOU WISH TO BUY OR SELL SHARES

Of any Progressive and Sound Limited Concern  
THEN PLEASE

*Correspond with:—*

Sri Krishna, Seth, Esq. B.A.,

SHARE & STOCK AGENT,

CHANDNI CHOWK

DELHI.

## बेकार नवयुवकों की ज़रूरत

मुझे १५ पढ़े लिखे ऐसे नवयुवकों की ज़रूरत है जो  
३५) से ७५) रु० मासिक नौकरी पर काम करना चाहते हों।

प्रार्थनापत्र के साथ अपनी तालीम का पूरा २ इंच

लिखना भी आवश्यक है।

प्रार्थनापत्र भेजने का पता—

मि० रामनाथ कालिया, बी० ए०,  
चांदनीचोक, देहली।

## हाइड्रोकेफलज Hydrocephalus

### मास्तिष्कजलसंचय

(लेखक श्री वैद्यराज पं० मशवारप्रसाद जो संकायक जीवन सुधा)

बच्चों के दिमाग में दो प्रकार का दाह हुआ करता है (१) जो तन्दुरुस्त बच्चों को भी हो जाया करता है । (२) प्रायः सिकराफ्यूलस मिजाज (यक्ष्मा प्रकृति) के बच्चों को ही हुआ करता है । इनमें पहले को इनकैकुलाइटिस (Incephlitis) कहते हैं और दूसरे को एक्यूट हाइड्रो केफलज कहते हैं ।

(१) पहली क्रिम का प्रदाह बच्चों को बहुत ही कम होता है । (२) दूसरी क्रिम अर्थात् एक्यूट के लक्षण लिखे जाते हैं इसके लक्षणों को तीन दर्जों में विभक्त करते हैं । १ (पहले दर्जे में बहुत सी अलामात दिमाग के कंजश्चन (चून के जमाव) की पाई जाती हैं । और बुखार रहा करता है । जिसके उतर्गने बढ़ने का कुछ निश्चित समय नहीं । बच्चा सुस्त और ठमका मिजाज चिड़चिड़ा हो जाता है । चेष्टा करने में सुस्त मान्द्रम होता है, गोजाना की खेल कूद उसे नहीं आती, कभी २ तबियत में ऐसा हो जाता है कि खेलने २ एक दम रुक जाता है और बीड़ कर अपने सर को माता की गोद में छुपा लेता है और हाथ से सिर को पकड़ कर दर्द सर की शिकायत करता है, या सिर्फ यही कहता है कि मैं अब थक गया हूँ और सोना चाहता हूँ । कभी २ ऐसा होता है कि उसका सिर घूम जाता है । तब भोचका सा खड़ा रहकर इधर उधर ताकता रहता है, जब यह लक्षण स्वतन्त्र हो जाते

हैं, तब या तो रो देता है या होश में आकर फिर खेल में लग जाता है । यदि नन्हा बच्चा हो तो माँ का गोद में खाँक खाँकर लिपट जाता है । जो बच्चे चल फिर सकते हैं वे चलते वक्त अपने एक पाँव को घसीट कर और रुक २ कर चलते हैं । मन्दगति रहते हैं, कभी २ खेलने २ एक दम खाना माँग बैठता है, भोजन देने पर इनकार कर देता है । कभी २ खाते वक्त उबकाईयाँ आती हैं, और कैं करना चाहता है, व्यास कम होती है, बाज दर्द खाने पीने दोनों से ही नफरत होती है कभी २ तो सिर्फ खाने के बाद ही कैं कर देता है । कभी खाली पेट भी कैं हो जाती है । जिससे श्वेत रंग की रूबत निकलती है । पर इस बमन से कुछ भी फायदा नहीं होता, यद्यपि दिन में दो तीन बार से ज्यादा कैं नहीं होती लेकिन कई रोज तक बराबर होती रहती है । सिर भारी इसमें दर्द ज्यादा होता जाता है, पेट बिगड़ा रहता है क्योंकि शुरू ही से कब्ज रहता है । पाखाना कम भिन्न २ रंग का बन्दूदा होता है, जिसमें पित्त कम निकलता है, जवान के किनारे और नोक सुखे होते हैं बीच का हिस्सा सफेद होता है, नब्ज तेज और बेकायदा, बच्चा प्रायः निद्रा सी में पड़ा रहता है, बाज दर्द दिन में २-३ बार सोना चाहता है, लेकिन बेचैन रहता है अच्छी प्रकार सो नहीं सकता, दाँत पीसता है सोते समय आँखें खुली रहती हैं । जरा सी आहट या बिना कारण

ही खौफ खाकर चौंक पड़ता है। रात में यत्न बत्ती को रोशनी को बदलाव नहीं होती, याद रहे कि ये सारे लक्षण एक ही बच्चे में नहीं पाये जाते। अगर मौजूद भी हों तो बराबर एक सा नहीं

जल मस्तिष्क (Hydrocephalus) हाइड्रोकेफलस



(श्री० डा० त्रिलोकीनाथ वर्मा के मौखिक से प्राप्त)

यह कन्या पांच वर्ष की है, यह अभी अपने सहारे न बैठ सकती है, न खड़ी हो सकती है, बोल भी नहीं सकती, गिर कितना बड़ा है। गर्भाशय ही में रोग हो जाने से इसके मस्तिष्क के कोष्ठों में जल अधिक इकट्ठा होगया। मस्तिष्क फैल कर खड़ा होगया है, इसके साथ साथ खोपड़ी की चमकी हुई हड्डियाँ भी फैल गई हैं, और खोपड़ी बड़ी होगई है, रोग असाध्य है।

रहते। बच्चे की हालत प्रति-रूप बदलती रहती है। कभी खुश कभी सुस्त हो जाता है। यह दर्जा अक्सर ४-५ रोज तक रहता है। अगर उस समय रोग का निश्चय न होकर इलाज न हो सके तो द्वितीय अवस्था पर रोग पहुँच कर लक्षण प्रकट करता है तब यह असाध्य होता है, इस दर्जे में बच्चा बिल्कुल सुस्त और फिकरमन्द सा रहता है। बैठने की ताकत नहीं रहती प्रायः सोना ही चाहता है। आँखें अक्सर बन्द, माथे पर ल्योरी पड़ी रहती है, हिलने में तकलीफ होती है, जब तक बुलाया न जावे नींद में पड़ा रहता है। बातचीत होश की करता है, लेकिन बहुत कम, मिजाज, चिड़चिड़ा और ठंडे सांस भरता रहता है या जोर २ से चीखें भायर दूँ सरको शिकायत करता है। जब रात आती है तब ये लक्षण बढ़ जाते हैं। इसीलिये कभी तो जोर २ से रोता है कभी बहकता है, नाड़ी निर्बल और आहिस्ता २ चलती है, कै वन्द हो जाती है। कब्ज बढ़ जाता है, पेट दब जाता है।

(३) तीसरा दर्जा—इसमें बच्चा पेसा गफिल हो जाता है कि उसे होश में लाना मुश्किल हो जाता है। बाजू दफे कमेड़ा होकर बच्चा बिल्कुल बेहोश हो जाता है। कमेड़े के वक्त शरीर के एक भाग में बनिस्बत दूसरे भाग के व्यापक पेठन होती है। कमेड़े के बाद एक हिस्सा या तो बिल्कुल निश्चेष्ट हो जाता है। दूसरा भाग आप ही आप हरकत करता रहता है। कमेड़े के बकजिघर की तरफ पेठन व्यापक होती है, प्रायः बही भाग निश्चेष्ट होता है। जब यह तीसरा दर्जा पूरी तरह हो जाता है तो बच्चा एक पांच कैला देता है दूसरे

को पेट पर सिकोड़कर बेहोश चित्त पड़ा रहता है हाथ कांपते हैं। बच्चा अपने होठ और नाक को नोंचता रहता है यहां तक कि खून निकाल लेता है एक हाथ जननेन्द्रिय पर रखे रखता है दूसरे को अपने चेहरे और सिर पर फेरता रहता है। कभी सिर ठण्डा कभी गरम कभी चेहरा सुख कभी पीका होता है। धमनीस्पन्दन अत्यन्त कमजोर होती है। आन्त्रिकार हृदय पर हाथ रखने से ही नरज मालूम होती है। आंखों की पुतलियां स्थिर और फैल जाती हैं, बेहोशी की हालत में बच्चेका मुंह खुद व खुद चलता रहता है मालो कुछ चबा रहा है या निगल रहा है। बाजूदके एक ही कमेड़े में बच्चा चल देता है या ऐसी हालतमें कुछ दिनों तक जिन्दा रह सकता है। याद रखना चाहिये कि यह रोग जिस तरह बर्णन किया गया है उसी तरह हमेशा प्रकट नहीं होता प्रत्येक रोगी में कुछ न कुछ प्रकट अवश्य मिलता है। जैसे किसी के कमेड़ा सारे शरीर में होता है किसी के एक तरफ होता है। किसी को कन्वल्शन के बाद फाजिज हो जाता है किसी के हाथ पांव बिचकर सिर्फ ऐंठते ही रहते हैं। कोई बीमार कभी तक बेहोश पड़ा रहता है कोई जल्द मर जाता है। लेकिन ऐसी भिन्नता से रोग निर्णय करने में कोई कठिनाई नहीं होती।

#### पूर्वरूप—

इस रोग के आरम्भ होने से महीनों पहले बच्चे की ताकत घटती जाती है वह दुबला होता जाता है। कभी व बुखार, खांसी, सुधागरा, प्रायः कब्ज रहता है, कभी २ हाथ पांव में दर्द, सिर में दर्द की शिकायत करता है, दिन व दिन हलत

खराब होती जाती है। बुखार ज्यादा हो जाता है, बच्चा सुस्त हो जाता है, अब सिर के दर्द की शिकायत नहीं करता, यकायक किसी रात को बेचैन हो जाता है, कमेड़े आने लगते हैं, रोग जाहर हो पड़ता है।

#### मृत्यु परचात रोगी परीक्षा—

मृत्यु बाद दिमाग को खोलने से इसके परचे सफेद धुन्धले नजर आते हैं और जर्द रक्त का लिम्फ (रक्तवत) और दिमाग के परदों तथा अन्य अङ्गों में द्युधर कल के छोटे २ दाने पाये जाते हैं दिमाग के खानों में खून का पानी पाया जाता है।

#### निदान—

कोई बच्चा खासकर तपेदिक (यक्ष्मा) रोग से पांडित पिता माता के रज वीर्य से उत्पन्न हो बिना किसी प्रत्यक्ष कारण के हन्त या महानों से जोमार हो और जब कभी वह निद्रा में या सुप्त मालूम हो खांसी की अधिकता हो ऐसी अवस्था में एक्बूट हाइड्रोक्फल्ज की शंका करनी चाहिये। क्योंकि थोड़ी २ और लगातार शुरू खांसी इस रोग के प्रारम्भ में प्रायः हुवा करती है। कभी २ कै(बमन) भी होती है, धमनीस्पन्दन में यदि कमीवैसी होतो इस रोग के पैदा होने में शक नहीं करना चाहिये। यह रोग प्रायः बच्चों में ५ साल से पूर्व ही पैदा होता है।

#### कारण—

यक्ष्मा की सम्भावना वाले बच्चों को प्रायः होता है दुबलापन, कष्ट से दांतोंका निकलना, सिर पर चोट बगैरा लगना, यकायक डरना, ज्यादा गुस्सा होना, ये सब एकसाहितिक (सन्निवृष्ट) कारण हैं।

यह बीमारो तीन प्रकार से शुरू हो सकती है,

१-मस्तिष्क के लक्षण क्रमशः पैदा होते हैं।

२-बिना किसी विशेष पूर्वरूप के एकदम सिर-दर्द, ज्वर और कमेड़े से यह रोग प्रारम्भ होजाता है। ३-यह रोग गुप्त रूप से इस प्रकार प्रारम्भ होता है कि चेचक के दूर होने के बाद या किसी और त्वचा रोग के अन्त में थोड़े २ लक्षण प्रकट होते हैं।

### परिणाम—

इसका परिणाम भयंकर होता है, जब यह बीमारी किसी तन्तुरुस्त बच्चे को यकायक तीव्रता से हो जाती है। परिणाम कभी अच्छा भो निकल सकता है, परन्तु जब यह रोग क्रमशः या गुप्त रूप से निर्बल यक्ष्मा प्रकृति के बच्चों को होता है तो इसका परिणाम सदा बुरा ही होता है।

### चिकित्सा—

इस रोगकी पूर्वावस्था में ही यदि उपयुक्त चिकित्साकी जावे तो बीमारी रुक सकती है, जब लक्षण पूर्णरूप से प्रकट हो जावें तो चिकित्सा से बहुत कम फायदा होता है। जिस प्रकार यक्ष्मा के रोकने की कोशिश की जाती है। उसी प्रकार इसमें भी कोशिश करते हैं। जिस वंश में इस रोग से पीड़ित होकर कई बच्चे पहले मर चुके हों या वे इस रोग की तरफ विशेष प्राणी हों, तो माता को चाहिये कि वह अपने बच्चे को दूध न पिलावें किसी तन्तुरुत प्राय का दूध पिलावें और बच्चे को देहात में रक्खें। सड़ी से बचावें, भोजन सादा होना चाहिये, चिरकाल तक केवल बच्चे को दूध ही देते रहें, जब तक उसकी

चार डाढ़ें और ऊपर नीचे के सामने के दांत न निकल आवें तबतक दूध देना बन्द न करें। खुली हवा का सेवन अत्यन्त लाभप्रद है। दांत निकलते समय बच्चे की रक्षा का ध्यान अवश्य रखना चाहिये, ताकि काली खांसी या चेचक की दूत न लग जावे। कब्ज न होना चाहिये। पेट की बीमारी को मामूली न समझा जाय, पौरन ही एरण्डीका तेल या सनाय देकर पेट साफ करें, जब कभी सिर गरम और बच्चा बेचैन मान्टूम होवे पौरन एक दो घेन कैलोपेंटल खिलाकर थोड़ी थोड़ी मात्रा में दें। जब तक खुलकर दस्त न आवें सल्फेड ऑफ मगनेशिया इस प्रकार खिलायें— सल्फेट ऑफ मगनेशिया २ ड्राम, सीरप ऑफ औरंज, २ ड्राम, कैरवे वाटर ६ ड्राम सब को मिलाकर रखलें तीन साल के बच्चे को २-२ ड्राम देवें। ज्वर और कब्ज हो तो भो इसको ही देवें। विशेष जरूरत न होवे तो जोकें न लगावें, आवश्यकता पड़ने पर थोड़ी ही लगावें, क्योंकि यक्ष्मा प्रकृति बच्चों को खून निकलवाने की बर्दाश्त बहुत ही कम होती है। रोग से छूटने के बाद शक्तिदायक निम्न लिखित प्रयोग देवें—

इनफ्यूजन कलाम्बे का क्वाथ २ औंस २ ड्राम इनफ्यूजन स्क्वब ४॥ ड्राम, टिचर औरंज्यशाई १॥ ड्राम सबको मिलाकर १ साल के बच्चे को दिन में दो बार ३ ड्राम की मात्रा में पिलावें। सिरदर्द की शिकायत बार २ होती हो तो गर्दन के पीछे सिटिन लगा देवें क्योंकि सिर के पास से पीप निकलते रहने से प्रायः हाईड्रोकेफलज का दौरा रुक जाता है। यदि इस रोग के रोकने का अबसर ही न मिले तो इसकी चिकित्सा तीन

प्रकार से होती है।

१—प्रथम खून निकालने से, २—गुसहिल (जुलाब) देना। ३—पारद के प्रयोग देना।

(१) जिन बच्चों की यक्ष्मा प्रकृति हो उनके खून निकालनेमें बहुत सावधानी करनी चाहिये रोग की प्रथम अवस्था में जोक द्वारा खून निकालें परन्तु दूसरे दर्जे के शुरु होने पर फिर खून न निकालें।

(२) रेचन—

इस रोग में रेचन से बड़ा फायदा होता है। परन्तु खुलकर दस्त आना ही काफी नहीं है, किन्तु कुछ दिन तक दस्त बराबर आते रहना चाहिये। कब्ज दूर होने के बाद थोड़ी २ मात्रा में किसी रेचक औषधिको ४-४ या ६-६ घण्टे बाद खिलाना चाहिये। और कभी २ वस्ति कर्म भी करते रहना चाहिये।

(३) पारद के प्रयोग—

ये पारे के प्रयोग भी बिरेचक औषधियों के साथ ही देना उत्तम है। सिर पर ठण्डे जल का सिंचन करना भी लाभप्रद है।

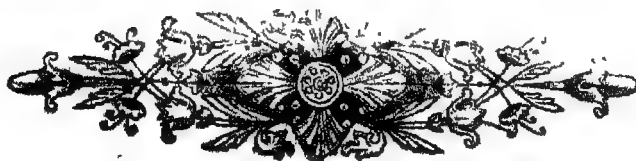
**आहार—**

जब लक्षण उग्ररूपमें हो, और जीमिचलाता हो, कब्ज रहता हो, ऐसी हालत में बहुत अल्प मात्रामें भोजन देना चाहिये। और बाद में भी बहुत ही हल्की गिज़ा जैसे सागूदाना देना चाहिये।

**अफीम—**

जब यह रोग भयंकर रूप में हो और बच्चे को दीवाने की तरह जोश आ जावे। और रेचन औषधि देने पर दिमागी गरमी और चेहरे की सुर्खी दूर होगई हो और नब्ज भी जल्द और कस-जोर चलती हो और फिर भी जोश दूर न हुवा हो तो अफीम के खिलाने से चैन पड़ जाता है और वरुचा सो जाता है। और जागने के बाद भी उसे आराम मालूम पड़ता है।

और जब यह रोग उग्ररूप में न हो, परन्तु ज्यों २ बढ़ता जाता है, मरीज को प्रलाप, बेचैनी, और दर्द सिर की शिकायत होती जाती है, और उसकी रातें बड़े कष्ट से कटती हैं, उसे तेज इलाज को बिलकुल वर्जित नहीं होती। अतएव इस अवस्था में जब और कोई चिकित्सा काम न दे सके तो अफीम की पूरी मात्रा देने से लाभ होता है।



# बच्चों के साधारण रोग तथा उनकी

चिकित्सा

( लेखक—डा० कन्हैयालाल जैन चीफ मेडिकल आफिसर चिल्ड्रन फ्री डिस्पेंसरी होज काजी देहली )

यूँ तो बच्चों की बीमारियाँ बहुत हैं परन्तु साधारणतया दो प्रधान हैं। (१) बदहजमी (२) खाँसी। अन्य दो प्रकार के रोग आँसू हैं जिन्हें प्रधान में गिन सकते हैं (१) लागरी, अर्थात् शारीरिक कमजोरी (२) नाफहमी, अर्थात् मस्तिष्क सम्बन्धी कमजोरी। इन्हें छोड़कर बच्चों को और कोई ऐसा ज्यादा खतरनाक मर्ज नहीं होता जिनके लिये उनके बागिमान उन्हें किसी चिकित्सक के पास ले जायें, ये ही चार प्रकार की बीमारियाँ प्रधान हैं जिनके इलाज के लिये किसी चिकित्सक की आवश्यकता पड़ती है। इन चारों रोगों पर एक एक पर एक एक विशाल मजमून लिखा जा सकता है परन्तु यहाँ हम बदहजमी पर कुछ थोड़ा सा लिखेंगे।

अगर थोड़ी बहुत ग़हतयात की जाये और बर बर नशलीश की जाये और मही-मही इलाज हो तो बहुत-सी जानें बच सकती हैं, बदहजमी की तीन खास अलमार्ते हैं (१) पेट का दर्द (२) क्रो और (३) दस्त का होना, जब कभी मातायें सिर्फ यह ही बयान करे कि बच्चा रोता है कोई नई बात नहीं बेवजह चीखता चिल्लाता है तो फौरन समझ लेना चाहिये कि पेट के दर्द की वजह से बच्चा बेचैन है बच्चे के रोने के और भी अमबाव हैं मगर पेट के दर्द का रोना खास तरह का होता है जिनको बच्चों की बीमारियों का तजुर्वा है उनको नशलीश में दिक्कत नहीं

होती। दोयम बच्चों का रोना मुनकर हर एक सिगम आवाज मुन कर ही पेट के दर्द को पहचान सकता है इस दर्द की खास पहचानें हैं— (१) जब बच्चा रोता है पेट पर घुटनों को सकोड़ लेता है, अगर पेट दंग्रा जावे तो मालूम होगा कि पेट मग्न है और तना हुआ है हाथसे जग दबाइये तो शायद आँतों का हरकत भी महसूस हो। कभी-कभी आँतियाँ गौर मामूली तौर पर चलती फिरती नज़र आती हैं तीसरे रिहा ग्यारिज होने से बच्चा रोता बंद कर देता है पाठक ग्याल करगे कि बच्चोंमें पेटका दर्द हम कदर आम क्यों है इसका बहुत सी वजुआत हो सकता है मगर खयाल में बच्चों की गिज़ा जो उनको दी जाती है बच्चों के पेट के दर्द में कारण है अगर वह सही तौर पर हजम न हो तो इस किसम के तेजाब बन जाते हैं जिनसे आँतों और मेदे में खराश पैदा हो जाती है दूसरे अगर ऊपर का दूध दिया जाय और वह भी बेकायदे पिलाया जाय तो मेदे में पहुँच कर दूध बुगी तरह फटता है बड़े-बड़े और मख्त टुकड़े बन जाते हैं। जब वह आँतों को बढ़ते हैं तो पेट का दर्द होना लाजमी है तीसरे यह वजह भी हो सकती है कि बदहजमी की वजह से आँतों में हवायें अधिक बने रियाह रुकने से आँतों में तनाव ज्यादा हो जाता है। सिर्फ तनाव ही ऐसा दर्द पैदा कर देता है कि बच्चे उसको बरदास्त नहीं कर सकते और रोते हैं:—



Dr K L Jain, L S M F.  
 MCh F.O.C.  
 (Urology) The Dispensary, Dharam



पेट के दर्द का इलाज बड़ा आसान है प्रथम एक हलका सा मुसहिल दे फिर बच्चे को चूने का पानी एक चमचा दिन में चार बार दूध के साथ देते रहें अगर दर्द की हालत में यह इलाज किया जाय तो दर्द जाना रहेगा और अगर बाद दर्द के भी थोड़ा थोड़ा मुसहिल और दूध पानी देते रहें तो कभी दर्द की शिकायत नहीं होगी अलावा बदहजमी के पेट का दर्द एक और वजह से भी हो सकता है और यह बच्चा मसाला और गुरदे का दर्द है गिजा या वेपेनदाली की वजह से और पानी की फिल्लत की वजह से आब आने लगती है यहां दर्द को बजह होता है अगर बच्चों के नितनावे को आप देखें तो उन पर जर्द रंग के पदार्थ और धार्मिक नारीक योगिक पैमिडकी कपड़े भी लज्ज प्रार्थनी।

कै — बच्चों में दूध डालने और कै करने की शिकायतें भी बहुत आम हैं यह शिकायतें एक तो इस तरह की होती हैं कि बच्चे दोपने में अच्छे खासे होते हैं कोई दूसरी शिकायत नहीं होती मिनाय दूध डालने और कै करने के। यह शिकायतें अमूमन उन बच्चों की होती हैं जिनके मेदों में गिजा मेदों की जमागत से ज्यादा पहुँच जाये ज्यादा गिजा का वह कै करके निकाल देते हैं ज्यादातर बदनीयत बच्चे इस रोग का शिकार होते हैं खाने के मजे में जो कुछ सामने आता है खाते हैं उनका इलाज यही है कि उनके खाने की निगाहदाशत की जाये और जब यह बदनीयत और लालची बच्चे उसमें मुवतिला हों तो उनको फाका कराया जायें। इसके अलावा जिगर और मेदा की खराबी में भी कै की शिका-

यत हो जाती है। जिगर की खराबी की वजह से जो कै होती है उसके दोरे रह रह कर पड़ा करते हैं। इसका इलाज भी ज्यादा दुशवार नहीं गिजा कम कर दोजिये और (Glucose) अर्थात् अंगूर की शर्करा का शर्बत पिलाइये एक ही खुराक कनई नौग पर कै को रोक देती है और अगर कै बन्द न भी हो तो राँगा ज्यादा देर तक नहीं रहता (Glucose) असर जरूर दिखाती है, कै के दोरे होने पर ज्यादातर जिगर की खराबी का दखल होता है। लेकिन कुछ मइसरीन (Migrain) के मरोजों की कै भी उसके बहुत मुशाय होती है भाइसरीन बचपन में होती है और काबिल इलाज के बाद इस बीमारी से बिल्कुल निजात मिल जाती है।

मेदे की कै दो तरह का होती है अब्बल फारी पानी अगरजी दोयन पुगना और दर्द का। कभी कभी पुगना कै दाइमी मूरत भी अस्तयार कर लेती है पहिले किम की कै की नशाखीस और इलाज दोनों बहुत आसान हैं, मरोज को लाने वाला हात कहना है (१) कै को शुरु हुये ज्यादा अरसा नहीं हुआ थोड़ा देर से शुरु हुई है (२) जब से शुरु हुई है बराबर हो रही है बंद ही नहीं होती (३) कै के साथ बुखार भी है और पिंडा गरम रहता है जबान शुष्क है और चेहरे पर झुरियाँ पड़ी हुई हैं। इस कै का सबब मेदे की खराबी होती है बदहजमी की वजह से या सरदा लग जाने के सबब से मेदे के अन्दरूनी जानिव बरम होता है। इस तरह की कै दाज औकात दूसरी बीमारियों में भी होती है। कई एक शदीद अमराज की इबतदाई अलामत इसी

तरह की कै होती है। मसलन निमोनिया और गरदन तोड़ बुखार में कै और मितली अक्सर हुआ करती है। मर्ज के को बजह से कोई भी डाक्टर कतई तौर पर यह नहीं बता सकता कि इन बीमारियों में से कौन की बजह से कै हो रही है। अकलभंड डाक्टर अपनी राय के बताने में जल्दी नहीं करता। तशखीश न बताने के यह मानी नहीं है कि इलाज भी न किया जावे। मेदे की कै, में इलाज का एक ही असूल है।

गिजा बंद कर दीजिये और इस तरह की चीजें दीजिये कि मेदे की किल्लों पर खलीश पैदा न करे मसलन (Glucose) और (Almin water) बहुत अच्छी चीजें हैं। नुसखा:- Glucose अगर की शकर एक डराम (चार मांश) पानी आधी छटांक दिन में त्रितनी मतेवा बच्चा पानी मांगे दीजिये। अगर कै ज्यादा हो तो मोडा-वाइकार्व तीन मोन इजाका कर दीजिये। नुसखा नं० २:- फेलुमन वाटर भी बहुत आसानी से हर एक बना सकता है इसके अलावा पेट की सफाई के लिये Calomel बहुत अच्छी चीज है। बड़ों के मुकाबले में बच्चे कैलोमन परदाश भी खूब कर लेते हैं। कैलोमन  $\frac{1}{4}$  मोडा वाइकार्व २ मोन इस तरह ८ सफूफ बना लीजिये और २-२ घंटे के बाद बच्चे को दीजिये दो चार सफूफ के बाद देना देने की जरूरत न पड़ेगी।

(२) पुरानी कै, रफता रफता देर पाके बढ़ती है इस प्रकार की कै, ज्यादा सिदन के साथ शुरू नहीं होती। कभी कभी ऐसा जरूर होता है कि एक साथ शुरू हो जाती है इस किस्म की कै में ज्यादा हमकान इसका है कि मेदे की छोटी आंत

से मिलने की जगह तंग हो गई है। बच्चों में खासी तादाद इस मर्ज में मुबतला होती है। यह दूसरी बात है कि मर्ज तशखीश न किया जावे, इस मर्ज की सही तशखीश और फौरी इलाज पर बच्चे की जिन्दगी का दागेमदार है अगर गलत तशखीश हो और इलाज में देर का जावे तो इस कदर जईरु हो जाता है कि आपरेशन का मुतहम्मिल ही नहीं हो सकता और मेदे के मुंह बंद होने की या तंग होने की हालत में सजिकन आपरेशन ही बाहिद इलाज है। इस मर्ज की तशखीश भी ज्यादा कठिन है। अगर नीचे लिखी चन्द अलामान मौजूद हों तो आप आपरेशन का मशवरा दे सकते हैं।

(१) कै, अकलमस्त और दूर तक जावे (२) मेदे के इलाके में पेट पर आँत चलती दिखा तजर आयें। इसी जगह पर एक गूमड़ा भी महसूस हो अगर आप पेट को हाथ से दबाकर देखें। (३) कवज यह भी बहुत घुरा मर्ज है कई कई दिन तक वृजावन नहीं होती।

दस्त—यह हाजमे की बेतरतीबी की अलामत है। इनका बहुत ही अहम बामारी खयाल करना चाहिये। साठ का सदी बच्चों की बीमारियां हाजमे के बिगाड़ की बजह से होती हैं। हाजमे की बीमारी का इलाज जल्द से जल्द कर देना चाहिये मामूली बातों में दस्त आने लगते हैं। दस्त आने की बजह कई होती हैं (१) मेदे के फेल में कुछ नुक्स। यह कोई बड़ी खराबी नहीं होती सिर्फ मेदा अपने काम में दीला पड़ जाता है और (Hydro Chloaie and ) हाई-ड्रो क्लोरिक एसिड की मिकदार काफी नहीं

बनती मेदे की रक्तवत् इतनी तेज नहीं होती कि शिजा को अच्छी तरह हजम करे और बीमारी के जरासीम जो शिजा में शामिल हो जाते हैं उनको मार डालें। वस जरासीम और मेदे में शिजा की गड़बड़ से हाजमा खराब हो जाता है और दस्त आने लगते हैं। दूसरी वजह यह होती है कि शिजा जो बच्चे खाते हैं ममलन दूध या फल इन में जरासीम बहुत कमरत से होते हैं और तन्दुरुस्त मेदे की रक्तवत् भी इनको खुशी तौर पर नहीं मार सकती बच्चों की ज्यादा तापदायक इन में जरासीम को और दस्त का शिकार होती है। इन दस्तों का बच्चों की खेतन पर जो असर पड़ता है उसके विषय से उनकी नीति किसनों में तकसीम किया जा सकता है। १—सादा दस्त तन्दुरुस्त बच्चों की भी कभी एक आध दस्त आवाता है सिर्फ खाने की अदृश्यता से एक या आध खुगक दवा से बन्द हो जाते हैं और बच्चे की खेतन पर कोई खास असर नहीं पड़ता। २—कमजोर करने वाले दस्त बच्चों को राहें २ आधा ही करते हैं। इन दस्तों की वजह से बच्चे कभी पतल ही नहीं पाते, जो शिजा खाते हैं हजम ही नहीं होती जुबब बदन नहीं हो पाती दस्तों के रास्ते निकल जाती हैं। ३—हैज-नुमा दस्त। इन दस्तों के बाद बच्चा बहुत ही नाताकृत हो जाता है आंखों में हलकी और तमाम जिसम पर झुरियां पड़ जाती हैं यह तीनों हालतें मजह्ज दस्तों को देखकर ही तशखीश नहीं कर सकते किसके दस्त किस प्रकार के हैं लेकिन हां तमाम बातों को निगाह में रखकर एक डाक्टर आसानी से तशखीश कर

सकता है दस्तों में दो तरह की अलामत होती हैं एक मुकामी और दूसरी आम।

१—मुकामी अलामत—दस्तों की हाजत में अन्नडियां बहुत तेज हरकत करने लगती हैं और जल्द २ घूमती हैं इनका नतीजा यह होता है कि (Bill) या पित्त शिजा में अच्छी तरह नहीं मिल पाता वगैरह हजम हुई शिजा जल्द खारिज हो जाती है और इसी वजह से दस्तों पर पित्तों का रंग सालित होता है। यह हमेशा सवज रंग के होते हैं।

२—दस्त बहुत ही बढ़तदार होते हैं उसकी वजह भी यही होती है कि शिजा छोटी आंत में इनको देर नहीं रहती कि अच्छी तरह हजम हो जाते, वगैरह हजम हुये खारिज हो जाती है और बड़ी आंत में पहुंच कर जब रुकता है तो मड़ना शुरू हो जाता है। इस बढ़त में तामुन मेदा करने वाले की ज्यादा की बहुत दखल होता है।

३—नेजी-दस्त किसम के दस्तों में शिजा के सड़ने की वजह से एक खास बदतदार तेजाब पैदा होता है। अगर शिजा में चरबी ज्यादा हो तो यह और ज्यादा कामरत से पैदा होता है इस तेजाबियत की वजह से दस्त आने के बाद माय-रज के इर्द गिर्द जलन हो जाती है करीब की खाल सुख हो जाती है और बाज औकात झाले पड़कर बाद में जखाम भी हो जाते हैं। दस्त में अगर तेजाबियत ज्यादा हो तो समकतों कि बच्चों की शिजा में शक्कर और चरबी की जरूरत से ज्यादा जुज शामिल हैं।

#### ४—पीपदार और चिकनेदस्त—

इस प्रकार के दस्त इस बात का पता देते हैं

## रिकेट्स

( लेखक डा० हरचन्द्र गुप्त एम० बी० बी० एम फिजिशियन एण्ड सर्जन मई सड़क देहली )

### रिकेट्स—

इसको कभी कभी डी बीमारी (इङ्गलिश डीजीज) भी कहते हैं क्योंकि इसको पहले पहल एक अमेरिकावासी शरीरविज्ञ ने १८८१ में सही तौर पर बताया कि यह रिकेट्स (Rickets) जल्द एक फ्रांसीसी भाषा ((Riquits)) से निकला गया है, जिसका अर्थ है रोग की हड्डी की अपव्ययन से खराबी Deformiter डिफॉर्मिटर और वह आदमी जिसको डिफॉर्मिटीज हो। यह एक बीमारी है, जोकि निजा में कुछ अनामक कम होने की वजह से बच्चों की आत्र तौर पर होती है, जिससे कि हड्डियाँ नरम पड़ जाती हैं और फिर वोक्त की वजह से मुड़ जाती हैं। और कुछ अन्दरूनी हिस्से में लचकीला हो जाती है यह रोग इस मुहक में पाया जाता है। इस रोग के कारण मृत्यु भी अधिक होती है।

### कारण—

बच्चों का अपने बच्चों को दूध न पिलाना, बच्चों का ऐसे काम में लगा रहना जैसे कि मिलों या फैक्टरियों में जिससे बच्चों की परवरिश पूरी

नहीं हो सकती है। ज्यादा गुंजाज आवादी जिससे कि नानाम तन्दुरुस्ती खराब हो जाती है। निधनता, अज्ञान भी कारण है। इस बीमारी के बारे में दो प्रकार के सिद्धान्त हैं। (१) एक सिद्धान्त वाले यह कहते हैं कि भोजन में एक विशेष प्रकार की चीज (विटामीन डी) के न होने से होती है। और विटमीन की प्रायः स्तौतिक पदार्थों में पाई जाती है, यह चीज चूने की शरीर में जम्ब करती है। इसके न होने से चूना शरीर से बाहर निकल जाता है। और हाडूया चूने रहित रह जाती हैं। जिसके कारण पश्चिमी नरम होकर मुड़ जाती है। (२) दूसरे सिद्धान्त वाले कहते हैं कि यह बीमारी ताजा हवा की कमी, ज्यादा आवादी, व्यायाम की कमी, प्रायः मूत्र जो रेशमी की कमी से होती है, सम्भव है दोनों ही कारण होते हैं।

### लक्षण—

इस रोग के दो प्रकार के लक्षण जानने चाहिये (१) लम्बा अस्थियों के सिरे मोटे हो जाते हैं। यद्यपि वे अच्छी प्रकार मुड़ी हुई नहीं होती, क्योंकि इस बीमारी में अस्थि बनाने

कि वही आंनों में खराबी आगई है। इन दस्तों के साथ में आम अलामत भी खास तौर पर नुमाया होती हैं। जवान और जिल्द देख कर भी तशबीश में वही मदद मिलती है और जिल्द में

सुरियां पड़जायें और वह लोच और लचक धाकी न रहे जो स्वस्थ बच्चे में होती है तो यह बहुत ही खतरनाक अलामत है।



की ज्यादा कोशिश होती है और कामयाबी के साथ बहुत कम हड्डी बनती है। जिसका लाजमी नतीजा यह निकलता है कि वह जगह जहां से कि हड्डी बननी शुरू होती है यानी मिरे पर ज्यादा मोटी होती है, इसी वजह से पसलियों के मिरे भी मोटे होते हैं। और छाती की हड्डी के इरे मिरे मोटे २ उभरे हुये दाने मालूम होते हैं। जो कि मांश की तरह लगते हैं जोकि (Ricketypose) रिकैटिरोसि कहलाती है। इसी तरह खोपड़ी के हड्डियां भी बीच में मोटी हो जाती हैं।

**दमरे प्रकार के लक्षण—**जो हड्डी में होते हैं वे ये हैं कि हड्डी नरम हो जाती है अर्थात् इसमें चूना कम हो जाता है (कैल्सियम-फोस्फेट) जिसकी वजह से हड्डियां मुड़ जाती हैं। टांग और बाजू की हाडियां खस खा जाती हैं।

**आभ्यन्तरिक अङ्गों में परिवर्तन—**फेफड़े, मेदे, आंतों की सूजन, जिससे निर्मोनिया, व्यांमा, कैं, दस्त वगैरह ऐसे रोगा वच्चों को खूब और बार बार होते हैं। दूसरा परिवर्तन यह होता है कि गन्धरूनी हिस्से बढ़ जाते हैं। जैसे निल्ली त्रिगर के ये परिवर्तन आस्थियों की तबदीली से ज्यादा खतरनाक हैं।

**राग के भेद—**

(१) एक्यूट रिकेटस—जिसमें कि बीमारी बहुत जल्द आती है, और अन्दरूनी अङ्गों के लक्षण खास तौर पर पाये जाते हैं। हड्डी की तबदीलियां बहुत कम होती हैं। हड्डियोंमें दर्द होता है और बच्चेको पसीना बहुत आता है।

(२) क्रूर रिकेटस—जिसमें खास तौर पर हड्डियों की तबदीलियां ज्यादा पाई जाती हैं। ओससटाईप (Ossos-type) कहलाती है। दमरे की हड्डियां ज्यादा मुड़ती हैं और वे शस्त्रचिकित्सा से राह होती हैं।



(३) तासरा भेद—जिसमें आभ्यन्तरिक अङ्गों में सूजन होती है, (कटारल वैराइटी Catarrhal-variety) इसी विस्त में बच्चों की हड्डियां तो ठीक बनती हैं। लेकिन वे अतीसार, खांसी वगैरह रोगों से पीड़ित रहते हैं।

(३) तासरा भेद—जिसमें आभ्यन्तरिक अङ्गों में सूजन होती है, (कटारल वैराइटी Catarrhal-variety) इसी विस्त में बच्चों की हड्डियां तो ठीक बनती हैं। लेकिन वे अतीसार, खांसी वगैरह रोगों से पीड़ित रहते हैं।

(४) सोया भेद—जिनमें रक्तिको जोड़ दीजते हो जाते हैं आर के बगल बगल रोड़े जा सकते हैं, जैसे कि अगर सोया उठाया गेरो वेटिक बराइति जाते हैं। यही काम जोष खाद रखना चाहिये कि अगर तुम जिस बच्चे को देखो जिस में उल्लेखित का से उल्लेख पेटि जाते वह जरा जरा छोटी नकल हो तो इस काम बातों में से एक बनता होये। (१) गिरेटा (२) हिमारा ताकत का बर (३) रिक्टीय (गोला) यह बीमारी ३ मास की उम्र से पहली सर्दी होती और एक साल की उम्र से बाहर होकर है।

निदान—

(१) बच्चे बहुत देर में पुष्ट होते हैं, उम्र देर में नि जाते हैं, खोपड़ी में पर्दे देर में बनते हैं। बैठना आर चलना देर में संभवत हैं। (२) हड्डी के सिरे मोटे होते हैं और बसकर पसलियों में (३) हड्डियां मुड़ जाती हैं (४) रिकेटे हेड एक और बीमारी है जिसका सम्बन्ध निरुद्ध है। जिसे हाइड्रोफलाज कहते हैं। रिक्टीय बच्चे का सिर ऐसा मादूम होता है कि किया पदुप में बन्द करके चौकोर बनाया गया हो। उसका माथा चौड़ा और चपटा होता है। बाने आंखों के ऊपर बिल्कुल सीधा लकीर से जाता है, ऐसा ही वह बिल्कुल कनपटी पर चपटा मादूम होता है। हाइड्रोफलाज के बच्चे का सिर गोलाई में होता है और माथा आंखों पर झुका हुआ होता है इसी तरह कनपटी पर भी बाहर को झुका हुआ होता है।

हाइड्रोफलाज में—सिर को छोटी भी गोलाई में होती है, अर्थात् रिक्टी का सिर लम्बा

चौड़ा चपटा होता है।

(५) पांचवा भेद—बाज दफे रीढ़ की हड्डी में रोवैटिक किस्म में टेढ़ा सा खूब हो जाता है जो कि रीढ़ की हड्डी की तपैदिक पोन्स डिजीज) Potts disease से मिलता हुआ होता है लेकिन जांच करना बिल्कुल आवान है। अगर बच्चे को बगलों से पकड़ के ऊपर उठाया जाये तो गिकेटो का मोड़ (टेढ़ापन) या खम जाता रहता है और तपैदिक का मोड़ बीमारी रहता है, ( रिक्टीय बच्चे का अमूलन बड़ा पेट होता है। जो कि बाहर को निकला हुआ होता है, क्योंकि आम तौर पर बच्चों के आदतियों को मिश्रित बड़ा जिगर और अन्दर छोटी पैलियस Palsis होती है ये दोनों मध्य रिक्टीस में ज्यादा बड़ जाते हैं बाने जिगर बड़ा हो जाता है और पैलियस बहुत छोटी हो जाती है।

२—दूसरा—रिक्टीय बच्चों के पेट ठीक होते हैं, इसीलिये पेट बाहर को निकल आता है।

३—तीसरी बात—इन बच्चों के मनों और छांतों की बीमारियां आम तौर से होती हैं। जिनसे ज्यादा दवा खाने और पेट बाहर को आ जाता है, ऐसे बच्चों में और निशानियां तुम रिक्टीस कोपाओ तो तशखीश निश्चित हो जाती है।

इलाज:—

१—सब से पहले बच्चे की ताकत हाजमा ठीक करना चाहिये क्योंकि उसके भेदों और छांत वगैरा में सूजन होती है। इसलिये पहले पहल दस्त, कैं, भूकका न लगनाके मुआफिक इलाज करो।

२-इसके बाद उसकी खुराक तबदील करो और वह किस तरह करनी चाहिये के निशासता और शक्कर को कम करो । और घृत और परोटोन को ज्यादा करो । गाय का दूध (Cod liver oil) और १॥ साल के बच्चे को २ ( Point ) १। सेर २४ घंटे में देना चाहिये बहुतसी चीजें हैं जिनकी बच्चोंको जरूरत होती है । इसमें घृत बेरोटीन, फासफोरस, लोहा वगैरा हैं और यह ऐसी बीमारी में जल्दी शुरू कर देना चाहिये । चुने के नमक देने का कोई जरूरत नहीं क्योंकि दूध में यह बहुत होते हैं । अगर बच्चे में कमी चुना हों तो (Iron) नमक दो मिजा के साथ २ रोशनी, हवा का जरूर ख्याल रखना चाहिये । सूरजकी रोशनीमें बच्चेको बैठाना चाहिये । खासतौर पर मुबहको अगर सूरज की रोशनी न मिल सके तो Ultra Violet Rays डालना चाहिये । हमारे मुल्क में सूरज की रोशनी की कोई कमी नहीं, लेकिन जल्दी अच्छा कराने के लिये (Ultra Violet. Ray) के (Exposure) भी ठीक रहते हैं । हड्डियों के मुड़ जाने को

ठीक करने के लिये कभी सरजन की मदद लेनी पड़ती है लेकिन यह बात खूब याद रखने की है यह हड्डियों का मुड़ जाना बीमारी के ठीक होने के बाद खुद बखुद भी ठीक हो जाता है बाज दफा हड्डियों को मुड़ने से बचाने के लिये बीमारी के दौरान में हमको दोनों टांगें इकट्ठी बांध देनी चाहियें या टांग पर (Splints) लगाना चाहिये जो के पैर के नीचे तक जावे ।

आजकल (Vi.tam) की अदवियात खास आती है उनको इस्तेमाल करने से बहुत जल्द बीमारी ठीक हो जाती है ।

इनके बाकायदा इस्तेमाल से बहुत फायदा होता है यही चीजें अगर गर्भवती स्त्री को पिछले तीन माह गर्भ में दी जावें तो बच्चे को यह बीमारी होती ही नहीं ।

६ या ७ साल या १२ साल की उमर में होती है इस में हड्डियों की बीमारी ज्यादा होती है इसका इलाज सरजन कर सकता है और वैसे इसको रोकने के लिये वही अदवियात काम आती हैं ।

वैद्यां के लाभ की बात

## असली सतगिलोह

उत्तम औषधि बनाने के लिये उत्तम और सस्ता सतगिलोह हमसे मंगाइये । बड़े २ औषधालय हमसे मंगाकर लाभ उठा रहे हैं । एक बार अवश्य परीक्षा करें । मू० ८० तोला ६) एक सेर मंगाने पर डाक व्यय माफ होगा ।

पता—वैद्यवर बलदेवराम गुप्ता गढ़ी अण्डुआ खाँ (सहारनपुर) यू० पी०

# बच्चों का कमेड़ा (आक्षेप Convulsion)

(ले०—आ० वि० प० श्री देवदत्त जी शर्मा वैद्य शाम्बी शंकरगढ़ गुरुदासपुर (पंजाब)

वातज आक्षेप के कारण बालकों का मृत्यु भर्त्स्यता दिल-दिन बढ़ती जा रही है। इसीसे आज हम भयानक और कष्टदायक रोग के विषय में उचित चर्चा की जाती है। देश में प्रतिमास हजारों नहीं लाखों बच्चे इस पाजो रोग का शिकार बनते हैं और लक्षों की हजारों को घर इमने उड़ाइ दिये हैं। लेकिन वे अपने जीवन में अनेक क्रिया ऐसी देखी है जो कइ-कइ बच्चे जनकर भी निरसमान रही है।

**निदान**—यह रोग सर्वत्र प्रसिद्ध है, मना इस रोग से परिचित हैं इसलिये इस रोग का निदान देकर अधिक विषय बढ़ाना अच्छा नहीं समझता केवल इतना ही लक्ष्य देना है कि इस रोग के दौरे के समय बच्चे के मुंह से भाग आकर बच्चा बेहोश हो जाता है। जब तक इस रोग का दौरा फिर समाप्त नहीं होता बच्चे को होश नहीं आती। बहुत से बच्चे बेहोशी में ही इस संसार से सदा की चल बसते हैं। इस रोग में बच्चों का मृत्यु प्रायः दम घुटकर होती है, इसलिये इस रोग से खूब सचेत रहना चाहिये। ज़राभी असावधानी बालकों की मृत्यु का कारण बन जाती है, क्योंकि वह बहुत ही कोमल होते हैं। जिस बच्चे को आरम्भ में मुख में भाग (फेन) आकर बेहोशी (मूर्च्छा) हो, समझ लेना चाहिये कि इसे वातज आक्षेप (कमेड़े) का रोग है। इस बच्चे के लिए उसी समय आगे बताये हुए उचित

उपचार का प्रयत्न करना चाहिए।

## चिकित्सा

आयुर्वेद के मतानुसार यह रोग वातज है। प्राणों हकीम खून (रक्त) की गमी-सुखी से हो इस रोग का होता मानते हैं। जब बच्चे को इस रोग का दौरा हो, उसे उसी समय मुक्ती दवा में इसलिये छोड़ दो कि तबसे आराम-परवाम रुकने से बालक को मृत्यु न हो जाय। अनेक क्रिया दौरे के समय बच्चों को शीघ्र में लेकर बैठ जाता है और मुंह और सब बच्चों का लपेट देती है, यह बात ठीक नहीं है। कभी कभी मुंह पर कपड़ा डालने से बच्चों का दम रुक जाता है और मृत्यु हो जाती है। इसलिये दौरे के समय कभी बच्चे के मुंह को न ढको।

दौरे के समय किसी लकड़ी, कलम, पेन्सिल चम्मच या कलझी की डंडी आदि का सिंग बच्चे के मुंह में फोरन इसलिये दे दो, कि जबड़े बन्द न होने पावें। यदि जबड़े बन्द हो जायेंगे तो फिर अधिक कष्ट होगा और जबड़े भी बड़े यत्न से खुलेंगे, इसलिये यह उपाय शीघ्रता पूर्वक करो। तब तक यह बालक के मुंह से न निकालो जब तक कि बालक रोने न लगे। समय पर यदि कुछ न मिले तो अपने हाथ की अंगुलियों में ही कपड़ा लपेटकर अंगुली बच्चे के मुंह में डाल दो और तब तक न निकालो जब तक बच्चा रोने न लगे।

अथवा यूँ करें कि, जब कमेडे का दौरा हो उसी समय मन्त्रोष्ण दूध किसी चम्मच, गीपी या रुई के फोड़े से बालक के मुँह में डाल दो। दूध डालने में देर न करो, उसी समय डालो। समय पर दूध के अभाव में क्वोष्ण जल ही डाल दो। दूध और जल एक बार से २ तोला से अधिक न डालो। भारे भीरे कई बार करके दो। जब तक दूध या जल पहली बार का अन्दर न पहुँच जाय तब तक ऊपर से दूसरा बार न दो। दवाइय दूध या जल से असाधारण होने की आशा का जता सकती हैं।

इस रोग में बच्चे को मले का सूई जय धुत जाती है तथा बच्चे की मृत्यु होती है। इस लिये बच्चे का मुँह बंद न होने दो। मुँह बंद न होने से श्वास आता रहेगा और मुँह में दूध या पानी जाने से भले में तरो रहेगा, जिससे फिर सूई घुसने का भय न रहेगा। बच्चा अवश्य बच जायेगा।

### कुछ अनुभूत आपधि

(१) रक्त रंग की दूवा (दूा) पाय लघ्वेय र्वेता में सुगमता से प्राप्त होती है। इसका दो-चार पत्ते और एक कान्ती मिर्च डालकर जरा से पानो के साथ रगड़ लें। अब छानकर अग्नि पर जरा क्वोष्ण कर पिलावें। जिस बच्चे के अन्दर यह पहुँच जायगी वह अवश्य अल्पकाल के बाद ही रोन लगेगा। मृत्यु के भय से बचाने के लिये यह एक ही दिव्य वनस्पति है। यह शीघ्र ही बच्चे को होश में ले आती है। इस रोग के लिये यह ब्रह्मास्त्र के समान काम करती है। यह होनी चाहिये ताजी, सूखी हुई कुछ भी प्रभाव नहीं

दिखाती ऐसा हमारा अनुभव है।

जहाँ जगम पर सफेद दूध न मिले वहाँ हरी दूध ही र्वेत दूध के समान देदो। यह भी लाभ तो अक्षय करती है, पर जरा देर में।

जहाँ कुछ न मिले वहाँ क्वोष्ण जल ही दे दो। पर देदो कुछ जरूर। जब मुँह में क्षाम आता प्रारम्भ हों उसी समय दूध या पानी २०-३० बूँद बालक के मुँह में डाल दो। दूध भी इस रोग के होने को शीघ्र समाप्त कर देने के लिये अद्भुत आपधि है। अनेक बालकों के प्राण इसी ने बचाये हैं।

### आक्षेपान्तक—

कृष्णामृकभस्म, लाल साण्डिय रम्भ, कवचा कशर करभारी, जावित्रा, जायसुत, तावत, १०० बूँदों प्रत्येक डेढ़-डेढ़ भारा और तुलसी का पत्ता पत्र मंजरी १ तोला।

### विधि—

गवकों मूत्र छूट कर चूरा करे और फिर सब खरक में डाल कर पान कर काली तुलसी के स्वरस की १-१ भावना देकर बाजरे में बराबर गोली बनायें। छाया में सुखा कर रखें।

### मात्रा—

आधी से एक गोली तक।

### अनुपान—

तुलसी का रस। तुलसी अनुपान में कोई भी ली जा सकती है, पर जंगली तुलसी न होनी चाहिये।

### समय—

दिन में २ बार। रोग की प्रबल अवस्था में ३ बार।

### गुण-

मृगी, वायुका कमेड़ा, तड़का इत्यादि वायु रोगों में राम बाण है। योगरत्नाकर का लक्ष्मी नारायण रस भी इस रोग के लिये विशेष लाभदायक सिद्ध हुआ है इसलिये यहां उसका योग भी दिया जाता है।

### लक्ष्मी नारायण रस-

शुद्ध शिगरफ १ तोला शुद्ध वल्मनाभ १ तोला इन दोनों को खरल में डाल कर अदरक के रस में ३ घंटे तक खूब घोटो। फिर इनमें शुद्ध गंधक १ तोला, फुलाया हुआ सुहागा १ तोला, कूटकी का चूर्ण १ तोला, अतीस का चूर्ण १ तोला, पीपल छोटी का चूर्ण १ तोला, कड़ा छाल का चूर्ण १ तोला अन्नक भस्म १ तोला और लाहौरी नमक १ तोला मिला लो और एक घंटे तक घोटो। फिर वन्ती (जमाल गोटे की जड़) का क्वाथ बना लो इनमें डालो और तीन दिन तक घोटो।

बाद में मैनफल का क्वाथ मिलाकर ३ दिन तक खूब घोंटाई कराओ और गोली बनने लायक हो ने पर २-२ रस्ती की गोली बना छाया में सुखा कर किसी शीशीमें बंद कर चिट लगाकर रख दो। यही लक्ष्मी नारायण रस है। मात्रा १ से तीन गोली तक। अनुपान अदरक का रस। आक्षेप आदि में ३-३ घंटे के अन्तर से जब तक आराम न हो देते रहें। १६ गोली से अधिक एक दिन में किसी को न दें। बच्चों को खूब विचार कर दें। उनकी आयु के अनुसार मात्रा प्रथम ठीक कर लें और फिर विचारपूर्वक दें।

गुण-पीडाशामक, ज्वरघ्न, स्वेदल। उपयोग-सन्निपात, हिस्टेरिया, बच्चों का कमेड़ा, आधा

शीशी, शूल, शूलयुक्त अन्य रोग, अतिसर और सूतिका रोगों में उपयोगी है। निमोनिया रोग की तृतीयावस्था में जब वातविकार और प्रताप अधिक हो उस समय लक्ष्मीनारायण रस की २-२ गोली तगरादि क्वाथ (इसका योग भी योग रत्नाकर के प्रलापक सन्निपाताधिकार में है।) के साथ दिन में तीन बार देने से अद्भुत लाभ दिखाई देता है। हमने सैकड़ों बार परीक्षा करके यह बात जानी है। बच्चों को अवश्य इस रसको बनाकर लाभ उठाना चाहिये। हमारे प्रतिदिन व्यवहार की औषध है। सभी प्रकार के रोगों में (विशेषकर वात रोगों में) विचार पूर्वक लक्ष्मीनारायण रस देकर लाभ उठाया जा सकता है।

### आंजल-योग

एन्टी पाईरीन (Antipyrin) नामक आंग्ल औषध सर्वत्र बाजारों में डाक्टरी दुकानों से मिलने पर मिल जाती है। डाक्टर लोग विषम ज्वर या अन्य ज्वर कम करने के लिये इसका व्यवहार करते हैं। हमने इसे कमेड़े में अधिक लाभदायक पाया है। इसी से यहां इसका उल्लेख किया जाता है।

एन्टी पाईरीन का व्यवहार उसी समय करे जब कमेड़े का दौरा हो। कमेड़े के दौरे के समय यदि बच्चा आठ दस वर्ष के अन्दर का हो तो २ रस्ती दवा एक चमच गरम दूध में घोल कर बसी समय पिला दें। २ वर्ष से आठ वर्ष तक के बच्चे को १ रस्ती एन्टी पाईरीन एक चमच गरम दूध में मिलाकर दें। दो वर्ष से कम आयु के बच्चों के लिये केवल आधी रस्ती दवा का व्यवहार करना चाहिये।

## कण्ठ शालूक (Tonsils गदूद)

( ले०—साहित्याचार्य वैद्य पं० घनानन्द पन्त विद्यार्णव बाजार सीताराम देहली )

इस गलप्रन्थि ( शालूक ) (Tonsils) में दाह और शोथ होता है (Acute tonsillitis) साथ ही दाह शोथ के अन्य लक्षण भी होते हैं। यह रोग कहीं प्रधान और कहीं अन्य रोग के साथ उपद्रव भूत भी होता है। प्रधान के दो भेद होते हैं। नवीन और पुराना। अनेक रोगों में इनके मुँह के सब अंगुर विकृत हो जाते हैं अथवा इसके भीतर पाँप पड़ जाते हैं। अर्थात्-विद्रधि बन जाती है। इनमें से विद्रधि रूप ही कठिन होता है। इसको चिकित्सा अच्छी प्रकार जाननी चाहिये।

**कारण**—माता पिताको शालूक (टोन्सिल) हो तो सन्तान को भी होता है, शरीर में ठंड लग

ने से भी होता है आमचात होने से प्रथम या हो जाने पर लोगोंका शालूक (टोन्सिल) बढ़जाता है।

**लक्षण**—(१) ज्वर १०२ से १०५ तक, (२) गले की वेदना कान तक फैलती है, (३) निगलने बोलने में क्लेश, (४) गले के भीतर घाव होता है, गला सदा शुष्क मालूम होता है, स्वर बदल जाता है, जीवा का संचालन कम होता है, (५) गले के भीतर परीक्षा करने पर शालूक बढ़ा हुआ रक्तवर्ण देव पड़ता है और गले के नीचे का रास्ता (सप्तपथ) रुकने को हो रहता है। बढ़कर दोनों शालूक-परस्पर आपस में एक दूसरे को स्पर्श करते हैं। पहिले पहिला फिर दूसरा शालूक या दोनों साथ ही बढ़ते हैं, जिह्वा के पीछे

एन्टीपाईरीन (Antipyrin) के स्थान पर एन्टी फेब्रीन (Anti Febrin) और ब्रोमाइड आफ पोटैस (Bromide of Potash) का भी व्यवहार किया जा सकता है। मात्रा और अनुपात एन्टी पाईरीन के समान ही है। जिन घरों में बच्चे को यह रोग हो उनके माता पिता को प्रथम से ही इन औषधों में से किसी औषध को अपने घर में रखना चाहिये।

### एक और आज्ञा योग

R.

Pulvis Rhei Co. Gr. XX.  
Gum Ammoniaci Gr. X.  
Balsam Peru M. X.

Balsam Tolu M. X

Syrup Scilla D. II.

Olei Anisi M. VI.

Infusi Senaga D. IV.

Aquae Camphori D. VI.

M. Ft. Mixture

Signa A Teaspoonful to be given

every four hours,

R.

**अर्थात्**—एक ड्राम (६० बूँद) चार-चार घंटे बाद दें। जब कमेडा उठे उसी समय एक छोटा चमच भरकर बच्चे को दें। लाभ होगा।

गले के भीतर दोनों तरफ दोनों शालूक फूलकर सुपारी के दाने के समान हो जाते हैं। दोनों के सूज जाने पर प्रलाप भी हो जाता है। तालुदेश और जिह्वा शोथ से लाल हो जाती हैं, जिह्वा बड़ी हो जाती है। पहले यह शोथस्थान, शुष्क होता है परन्तु चिपकदार लसिका से आवृत होता है कुछ निगला नहीं जाता है, मुख से लार अपने आप टपक पड़ती है मुख के भीतर जावड़े में वेदना होती है। अतएव रोगी मुंह नहीं खोल सकता, इससे गले के भीतर देखने में बड़ी असुविधा होती है। परीक्षा करने के लिये मुख के भीतर धीरे-२ तर्जनी को प्रवेश कर शालूक की अवस्था देखने पर प्रायः शालूक टौन्सिल में जगह २ श्वेत वर्ण ज्ञत होते हैं और आस पास लाल होता है बाहर जावड़े के पास समस्त कफ ग्रन्थियां फूल जाती हैं, अनिर्द्व होता है (६) शिरोरुजा, अरति, मैली जिह्वा, मुखदुर्गन्धि, श्वासदुर्गन्धि, भूख कम, कोष्ठकाठिन्य, मूत्रघोररक्तवर्ण होता है। यह कंठशालूक का प्रदाह औषध प्रयोग से ठीक आराम भी हो जाता है। यदि आराम नहीं होता है तो शालूक क्रमशः पक जाता है। यदि नहीं पकता है तो ३ दिन से १२ दिन में अच्छा हो जाता है। परन्तु अच्छा हो जाने पर भी वह स्वाभाविक की अपेक्षा बड़ा रह जाता है। जो शालूक पकता है उससे ३-४ दिन बाद जाड़ा लगकर खुर आता है, अत्यन्त वेदना होती है, और शालूक के भीतर सरस राहत होती है ऐसा होनेपर समझना चाहिये कि शालूक (टौन्सिल) पक गया है। साधारणतः शालूक अपने आप ही फूट जाता है। यदि नाद

की हालतमें फूटता है तो पीप रक्त पेट में चला जाता है। अन्य समय फटने पर मुख से बाहर निकलता है। स्थानिक लक्षण द्वारा रोग निर्णय सहज है भावि फल शुभ होता है परन्तु कभी २ श्वासरोध वा पोषण भाव से मृत्यु हो जाती है।

### नूतन कंठ शालूक ( टौन्सिल ) चिकित्सा

प्रथमावस्था में सुचिकित्सा हो जाने से शालूक पकता नहीं, बालक व युवाओं को विष के योग हिगुलेश्वर, कफकेतु, आदि विशेष फल देते हैं। बूझों के शालूक में विष को नहीं देना चाहिये। शालूक होने के ३-४ घंटे। मध्य में विष के योगों के प्रयोग विशेष लाभ देते हैं। २४ घंटे बाद विष के योगों का व्यवहार न करे। प्रथम एक रेचक औषधि देकर ४-४ घंटे बाद आनन्द भैरव, धृन्वककेतु, हिगुलेश्वरादि का प्रयोग रोगी की अवस्था की मात्रा से करें, यदि २४ घंटे के भीतर खुर, प्रदाह यन्त्रणा कम न हो तो फिर विष के योगों को काम में न लावे। आमवात वाले रोगियों के कण्ठ शालूक में योगराज गूगल चन्द्रभा गूगल आदि औषधि दें। महालक्ष्मी विलाम सब अवस्थाओं में हितकर होता है। शालूक के रोगी का पेट मृदु विरेचन से प्रति-दिन साफ रखें। रोग की प्रथमावस्था में यदि शालूक (टौन्सिल) को चीर दिया जाय तो (विस्त्रात्र कण्ठ शालूकं माधयेत्तु गिडकेरिवन। सु०) वेदना दूर हो जाती है पकने की भी सम्भावना नहीं रहती। इस प्रकार चीग दें कि रक्त अधिक निकले फिर थोड़ा मोहागा डोड़कर या स्वतन्त्र पंचवलकल क्वाथ से, केवल गूलर के पत्तों के क्वाथ से कुल्ले कराई। इस प्रकार कम बारह बार एक

दिन में कुल्ले करावें। रसौत के पानी में बोलकर कुल्ला करावें। वातघ्न दशमूलादि क्वार्थों का नाड़ी स्वेद (मपारा) भी देवें। गले के बाहर जिस तरफ का शालूक बढ़ा हो। दोनों ओर हो तो दोनों तरफ अलसी की त्वल वा गोधूम की भुस्सी में थोड़ा लवण मिलाकर उपनाह स्वेद (पुलटिस) करने से भी वेदना शोध प्रभृति शान्त होते हैं। इससे शालूक (टॉन्सिल) पकने वाला हो तो पक भी जाता है। जब शालूक पककर पीप बाहर निकल जाय तो बाद में बीमार को ताकतवर दवा अभ्र, लोह, मकरध्वज, अग्नि तुण्डी वटी, प्रवाला-द्वियांग दें। आमवात रोगों को आमवातघ्न रसो-नपिण्डादि का भी प्रयोग करावें।

#### पथ्य—

प्रदाहावस्था में दूध में घरफ डाल कर दें और जब पकने लगे तब जितना गरम २ दूध पिया जाय उतना ही अच्छा। जिनके शालूक में फिर २ प्रदाह हो जाता है उनके लिये नीचे लिखी प्रतिपेधक चिकित्सा करनी चाहिये।

(१) गले के चारों तरफ प्रति दिन ठण्डे जल से धोवें।

मोहरा २ रत्ती, अकरकरा का चूर्ण १ मासे जल एक छटांक मिला कर प्रति दिन कुल्ले करने से पुनराक्रमण नहीं होता।

#### पुराने शालूक की चिकित्सा—

शालूक (टॉन्सिल) का प्रदाह पुनः २ होने से शूल इतना बढ़ जाता है कि शालूक वाले बालक की छाती कवृतर को सी हो जाती है, कभी उबर भी रहता है, स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता। रोगीको

श्वास लेने में क्लेश होता है, शब्द अच्छी तरह नहीं सुन सकता, मुंह से श्वास लेने से जो २ रोग हो सकते हैं वे तो होते ही हैं इनके अतिरिक्त बालक की बुद्धि मन्द हो जाती है, शकल बदल जाती है, चेहरा देखने से बालक बेवकूफ सा विदित होता है, पढ़ने में अपने सहपाठियों से भी पीछे रहता है। खांसी रहती है, गला आ जाता है, जग २ जुकाम हो जाता है। श्वास वायु पूरा न पहुँचने से रक्त ठीक शुद्ध नहीं होता। ऐसे अवसर पर शालूक को निकलवा देना चाहिये।

यदि शालूक (टॉन्सिल) अपेक्षा से छोटा हो तो (१) पंचवल्कल त्रिफलादि संकोचक औषधों के क्वाथ से (२) अकरकरा त्रिफलादिचूर्ण एक को वा समस्त मधु से मर्लें। गगर करवाने से अच्छा लाभ होता है। (३) चरकोक्त कालक चूर्ण के मर्दन से भी लाभ होता है। (४) खदिरादि गुटी का चूमना भी लाभप्रद है। यदि रोगी कण्ठमाला त्रय प्रकृति प्रग्त हो तो प्रातः सायं मात्रा से च्यवनप्राश, मकरध्वज, नवयाम चूर्ण का सेवन करावें, रोगी धनी हो तो समुद्र के किनारे की जल वायु परिवर्तन करे, इस प्रकार पुराना बड़ा भी शालूक (टॉन्सिल) ठीक हो जाता है। शालूक के अतिरिक्त गले के भीतर नाक के पीछे के भागमें छोटी २ रम ग्रन्थियां एडिनोइड्स होती हैं। ज्यों २ बालक बड़ा होता जाता है ये ग्रन्थियां स्वतः छोटी हो जाती हैं। परन्तु कुछ बालकोंमें यह ग्रन्थियां बड़ी ही रहती हैं यदि शालूक दोनों तरफ या एक तरफ बढ़ा रहे जैसा प्रायः होता है तो इनसे भी स्वास्थ्य वच्चे का विगड़ता है, बुद्धि नहीं होती। इनका सम्बन्ध कान के साथ

## नेत्र रोग

(ले०—Dr. N. S. Mitra Incharge of Dr. Shroff's Charitable Eye Hospital Delhi)

शिशु जीवन में जो साधारण नेत्र रोग देखे जाते हैं उनके विषय में आर लोगों को कुछ कहने का अवसर जीवन सुधा के सम्पादक महाशय ने दिया है।

(१) Trachoma—यह रोग भारतवर्ष में और विशेष कर हमारे प्रान्त में बहुत साधारण है। पलक के अन्दर में दागे हो जाते हैं और उनकी रगड़ से Cornea के ऊपर जख्म भी हो जाते हैं। प्रान्तों में अशिक्षिता माता अपने शिशुओं की आँखों के अन्दर इस रोग को अन्धकार करने के लिये अपनी मनमानी दवाइयाँ भर देती हैं। यह दवाइयाँ साधारणतः बहुत Irritants होती हैं और इससे नेत्रों को बहुत नुकसान भी पहुँचता है। गत दश वर्ष में हमने कितने सहस्र ऐसे नेत्रों को देखा जो कि माता की अविवे-

चना से समस्त जीवन के लिये बिगड़ गई हैं।

(२) शिशु के जन्म के समय यदि माता को Gonorrhoea हो तो जन्म के बाद बच्चे की आँख लाल हो जाती है और इसमें से पीले रंग का मवाद आने लगता है। यह बहुत खतरा की बात है क्योंकि इससे बच्चे साधारणतः अन्धे हो जाते हैं। पश्चिमी देशों में इस रोग का प्रचार पहिले बहुत अधिक था, परन्तु आजकल Urade की व्यवस्था और Maternity hygiene की उन्नति से इस रोग का प्रचलन बहुत कम हो गया है। इस रोग के प्रतिशोध के लिये शिशु के जन्म के बाद उसके नेत्रों में 1 Silver nitrate solution एक एक बूँद डाल दिया जाता है। माता की उपयुक्त चिकित्सा से और शुद्ध व्यवस्था से इस रोग का विस्तार प्रायः बन्द हो सकता है।

होने से कान के कठिन रोग होने हैं। श्वास लेने में क्लेश होनेसे विशेषतः निद्रितावस्था में बालक धुरधुराता है, बच्चा बेवकूफ होता है, शुष्क काम, पुराना मर्ची, मुख आधा खुला रहता है। कभी कभी के साथ मिला खून भी निकलता है। अतएव इन्हें इडिनाइटम उपशालुक नाम से कहें तो उचित हो होगा। शालुक का कण्टरोडिगी (डिप्थीरिया) से अन्वित निदान में मन्देह होवे और निश्चित निदान न होसकने पर तत्काल न हो सकने पर

तत्काल डिप्थीरिया का इन्जेक्शन देना उचित नहीं मानते हैं।

### उपशालुक रस ग्रन्थियों की चिकित्सा—

दिन में ३-४ बार खरियर, बच्चुलादि कपाय वृक्ष क्वाथसे गरारे और ५ गत्तो स्वर्जिसार १ छटांक पानी की पिचकारी से गला धोवें। इनसे लाभ न होने पर अम्र चिकित्सा करे।

१. शालुक में यदि कानों से कम सुनाई दे तो स्वर्ण वज्र के सेवन से लाभ होता है।

(३) माता पिता के आतशक होने के कारण उसका प्रभाव शिशु के नेत्रों में भी पड़ता है। साधारणतः ५ से १२ वर्ष तक की अवस्था में बालक के नेत्रों में Interstitial keratitis हो जाता है। इसके साथ जन्म गत आतशक के और लक्षण भी पाये जाते हैं, दाँतों की खराबी कान की खराबी, और नेत्रों की खराबी एक साथ पायी जाती है। इसके प्रतिशोध के लिये प्रथम कर्त्तव्य यह है कि पिता माता के रोग की उपयुक्त चिकित्सा हो। जिस वंश में माता का हमल गिरने का या विकलाङ्ग शिशु के जन्म का इतिहास हो उनके रक्त की परीक्षा होनी चाहिये। और इस रोग के प्रारम्भ से ही रक्त के शोधन के लिये शिशु की उपयुक्त चिकित्सा होनी चाहिये।

(४) उपयुक्त आहार न मिलने के कारण समस्त शरीर पर जैसा असर होता है उस प्रकार नेत्रों में भी खराबी पायी जाती है। आप लोगों को ज्ञात होगा कि हमारे खाद्यों के साथ Vitamin का होना कैसा आवश्यक है। इस vitamin के अभाव से बच्चों की आँखें सूख जाती हैं और किसी किसी अवस्था में २८ घंटे के अन्दर पिघल भी जाते हैं। प्रायः यह बच्चे बचते नहीं हैं। हम लोगों को उचित है कि प्रत्येक शिशु के आहार पर अधिक ध्यान दें। ताकि Xerosis या Keratomalacia होने का अवसर न हो। हमारे दूरिद्र देश में Infantile marasmus का प्रादुर्भाव अत्यन्त अधिक है। जबतक देश की सामाजिक और आर्थिक अवस्था की उन्नति न होगी तबतक इस रोग को हम दूर नहीं कर

सकेंगे।

(५) ग्राम प्रान्तों में शिक्षा के अभाव और कुसंस्कार के कारण चेचक का टीका लगवाने का प्रचार बहुत कम है। चेचक का दाना जिस प्रकार समस्त शरीर में निकलता है, उसी प्रकार नेत्र में भी हो जाता है और उसके कारण जलम होकर बालक अन्धे हो जाते हैं। इसलिये यह अत्यन्त आवश्यकीय है कि टीका लगाने का प्रचलन और अधिक हो जाय।

(६) भगवान् ने हमको दो आँखें दी हैं इस कारण कि हम दोनों से अपना काम लिया करें। आप लोगों ने देखा होगा कि बहुत से बच्चों की १ आँख बँहगी होती है। इसका इलाज यदि प्रारम्भ से ही कराया जाय तो बड़े होने पर भी बालक दोनों आँखों से काम ले सकता है। इसकी चिकित्सा बहुत परिश्रम और धैर्य साथ है परन्तु माता पिता की सहयोगिता होने पर इसका फल अधिक आशाप्रद है।

हम लेख का यह उद्देश्य नहीं है कि बालकों के नेत्र रोग का सम्पूर्ण विवरण आप लोगों को दिया जाय, उसके लिए पृथक पुस्तक की आवश्यकता होगी। हम आपका ध्यान इस ओर दिलाना चाहते हैं कि शिशु-जीवन से ही दृष्टि शक्ति की प्रयोजनीयता का यथायोग्य अनुभव आपको होना चाहिए। और न कि केवल नेत्र रोग की चिकित्स परन्तु दृष्टि की उत्कर्ष साधना करना और इस उद्देश्य से राजशक्ति और प्रजाशक्ति की सम्मिलित चेष्टा होनी चाहिये।

## नेत्राभिष्यन्द

(ले०—ड० के० डी० तलनियां चिकित्सक चूड़ामणि भिषगाचार्य प्रिन्सिपल श्री शिव कैलारा  
आयुर्वेद विद्यालय बागेश्वर अल्मोड़ा)

अक्सर शिशुओं को नेत्राभिष्यन्द (आंख उठना या दुखना) विशेष देखा जाता है यह रोग बड़ा उम्र वालों को बहुत कम होता है बालकों की गुहाइयों पर इस रोग के विकार प्रविष्ट रहते हैं। जो मक्खियों के द्वारा अन्य स्वस्थ बालकों में इसका रोगाणु प्रविष्ट होता है और वे बालक भी इस रोग से कष्ट उठाते हैं नेत्र की लाली, आंख न खोल सकना, तेज कड़क व जलन, इसका प्रधान चिन्ह है। इस पर भी शीत ऋतु में इसका विकार कम व उष्ण तथा वर्षा ऋतु में विशेष संक्रामण पाया जाता है ज्यों ही माँचे शुरू हुआ यह रोग फैलने लगता है एवं कुटुम्ब के जहाँ एक बालक को यह रोग आ घेरता है वहाँ अन्य बालक भी इस रोग से नहीं छूटने पाते इतना ही नहीं एक बार का आक्रमण दो चार दिन शान्त होने पर भी पुनः फिर से नया आक्रमण प्रारम्भ हो ६ माह तक एवं अनवरत क्रम से बालकों को यह रोग मताता आता है। गुरु भोजन, ऊष्ण वीर्य पदार्थ व शीत तथा मैला रहना इस रोग को पाले रहता है।

यदि यह रोग हो जाय तो इस बात का विशेष स्मरण रहे कि ३ रोज तक आंख में कोई दवा न डाली जाय पश्चात् तीन रोज के दवा डालना प्रारम्भ करे।

तथा अमावधाना व अन्त मन्त दवा डालने से यह रोग अपना भयंकर रूप धारण कर आंख

को ले दूबता है अस्तु इसके निवारणार्थ शतशोनु-भूत योग आगे दिये हैं।

**हर किस्म की आंख दुखने पर**

आई ड्रॉपलेशन नं० १ Eye Drop Lotion

No 1

ज़िंक सल्फ (Zinc Sulph) ३ ग्रैन  
बोरिक ऐसिड (Boric acid) १० ग्रैन  
कोकैन हाइड्रो क्लोर (Cocain hydroch)

२ ग्रैन

डिस्टिल्ड वाटर १ औन्स

मक्खन मिश्रण स्वच्छ शीशी में रख लो।

मात्रा—दो तीन बूंद हर चार घंटे पश्चात् डालो।

यह दवा आंखों में नहीं लगती।

आई ड्रॉप लोशन नं० २ Eye Drop Lotion  
No. 2

नेत्र चिन्दु नं० २

आर्ग्योरोल Argyrol ४४ ग्रैन

डिस्टिल्ड वाटर १॥ औन्स

नोट—डिस्टिल्ड वाटर के स्थान में नं० १ का गुलाब जल डालने से दवा और भी गुणवत्त हो जाना है।

दोनों का मिश्रण तैयार कर हर दूसरे घंटे में दो रोज तक डाल एक या दो रोज नागा कर दो जरूरन पड़ने पर पुनः डालो दवा आंखों में नहीं लगना बगैर डालना ठीक नहीं।

## Eye Drop Lotion No. 3

## नेत्राबिन्दु नं० ३

अरजेन्टी नाइट्रास

Argenti nitras ४ ग्रन

डिस्टिल्ड वाटर २ औन्स

दोनों का मिश्रण २-२ बूंद हर ५-५ घंटे  
परवान डालो।

## Eye Drop Lotion No. 4

## नेत्राबिन्दु नं० ४

Silver proteinite

प्रोटीनगोल १ औन्स

उम्दा गुलाब जल Rose water २ पौंड

दोनों का मिश्रण तैयार कर बोनल में कर लो।

हर १-१ घंटे बाद २-३ बूंद डालो नेत्राभि-  
ष्यन्द, नेत्र का लाली जलन व कड़क पर बहुत  
फायदा करना है पर याद रहे १ हफ्ता लगातार  
डालने परलान फिर १ हफ्ता नहीं डालना चाहिये।  
बना आंखें कुरूप हो जावेंगी। विशेष कर बच्चों  
के लिये ये बहुत मुफीद है और दवा आंखों में  
डालते ही शीतलता लानी है। लाली तथा रोगी को  
तत्काल चैन देती है बाज २ बालकों को १ या २  
बार के डालने मात्र से ही फायदा नजर आता है  
इस दवा का विशेष गुण ग्रीष्म व शरद कालिक  
नेत्राभिष्यन्द पर होता है। वर्षा व हेमन्त ऋतु में  
इससे कम फायदा देखने में आया है। तथा बगो  
हुई दवा कभी खराब नहीं होती।

## नेत्राबिन्दु नं० ५

## Eye Drop Lotion No. 5

बोरिक एसिड ४० ग्रन

कास्टिक १० ग्रन

उम्दा गुलाब जल ४ औन्स

उपरोक्त सब द्रव्यों का मिश्रण तैयार कर हर  
दूसरे घंटे में २-३ बूंद डालो।

गुण—नेत्राभिष्यन्द सुखी व जलन पर शीघ्र  
गुणप्रद है।

## नेत्राभिष्यन्द पर

## Zinci Oxide

(१) जिक ऑक्साइड १-२ ग्रन माता के दूध  
में घोल आंख पर डालो दिन को २-२ मरतबा  
डालो यह नेत्र रोगों पर उत्तम है विशेष कर  
नेत्राभिष्यन्द पर।

(२) नेत्रों के रोगों—लाली जलन व कड़क  
पर माता का दूध बार बार आंखों में टपकाना  
चाहिये।

(३) शुद्ध रसीत १ औन्स

गुलाब जल ४ औन्स

शुद्ध फिटकरी १ औन्स

सबका एकत्रित मिश्रण दिन के दो तीन बार  
आंख में डालो इस योग से शीतऋतु व वर्षाऋतु  
की आंख दुखनी (नेत्राभिष्यन्द) शीघ्र अच्छी होती  
है पर दवा जरा लगती है।

(४) मण्डा मार्का गुलाबी रंग, शुद्ध फिटकड़ी,  
बोरिक एसिड, भीमसेनी कपूर सबको बराबर ले  
१ प्रहर खरल कर शीशी में रखलो इसे शुद्ध  
शीशे की सलाई से आंख में आजने से आंखों

## नेत्राभिष्यन्द

(ले०—डा० के० डी० तलनियां चिकित्सक चूड़ामणि भिषगाचार्य प्रिन्सिप न श्री शिव कैलाश आयुर्वेद विशालय बागेश्वर अल्मोड़ा )

अक्सर शिशुओं को नेत्राभिष्यन्द ( आंख उठना या दुखना ) विशेष देखा जाता है यह रोग बड़े उम्र वालों को बहुत कम होता है बालकों की गुहाइयों पर इस रोग के विकार प्रविष्ट रहते हैं । जो भस्त्रियों के द्वारा अन्य स्वस्थ बालकों में इसका रोगाणु प्रविष्ट होता है और वे बालक भी इस रोग से कष्ट उठाते हैं नेत्र की लाली, आंख न खोल सकना, तेज कड़क व जलन, इसका प्रधान चिन्ह है । इस पर भी शीत ऋतु में इसका विकार कम व ऊष्ण तथा वर्षा ऋतु में विशेष संक्रामण पाया जाता है ज्यों ही माँच शुरू हुआ यह रोग फैलने लगता है एवं कुटुम्ब के जहाँ एक बालक को यह रोग आ पेरता है वहाँ अन्य बालक भी इस रोग से नहीं छूटने पाते इतना ही नहीं एक बार का आक्रमण दो चार दिन शान्त होने पर भी पुनः फिर से नया आक्रमण प्रारम्भ हो ६ साह तक एवं अनवरत क्रम से बालकों को यह रोग मताता आता है । गुरु भोजन, ऊष्ण वीर्य पदार्थ व शीत तथा मैला रहना इस रोग को पाले रहना है ।

यदि यह रोग हो जाय तो इस बात का विशेष स्मरण रहे कि ३ रोज तक आंख में कोई दवा न डालो जाय पश्चात् तीन रोज के दवा डालना प्रारम्भ करे ।

नया अस्मावधानी व अन्त सन्त दवा डालने से यह रोग अपना भयंकर रूप धारण कर आंख

को ले डूबता है अस्तु इसके निवारणार्थ शतशोनुभूत योग आगे दिये हैं ।

**हर किस्म की आंख दुखने पर**

आई ड्रॉपलेशन नं० १ Eye Drop Lotion

No 1

ज़िंक सल्फ़ (Zinc Sulph) ३ ग्रैन  
बोरिक ऐसिड (Boric acid) १० ग्रैन  
कोकॉन हाइड्रो क्लोर (Coconut hydroch) २ ग्रैन

डिस्टिल्ड वाटर १ औन्स

सबका मिश्रण स्वच्छ शीशी में रख लो ।

मात्रा—दो तीन बूंद हर चार घंटे परवान डालो ।

यह दवा आंखों में नहीं लगती ।

आई ड्रॉप लोशन नं० २ Eye Drop Lotion  
No. 2

नेत्र चिन्दु नं० २

आरगीरोल Argrol ४५ ग्रैन

डिस्टिल्ड वाटर १॥ औन्स

नोट—डिस्टिल्ड वाटर के स्थान में नं० १ का गुलाब जल डालने से दवा और भी गुणप्रद हो जाती है ।

दोनों का मिश्रण तय्यार कर हर दून्ने घंटेमें दो रोज तक डाल एक या दो रोज नागा कर दो जरूरत पड़ने पर पुनः डालो दवा आंखों में नहीं लगनी बराबर डालना ठीक नहीं ।

## Eye Drop Lotion No. 3

## नेत्रविन्दु नं० ३

अरजेन्टी नाइट्रास

Argenti nitras

४ ग्रन

डिस्टिल्ड वाटर

२ औन्स

दोनों का मिश्रण २-२ बूंद हर ५-५ घन्टे पश्चात् डालो।

## Eye Drop Lotion No. 4

## नेत्रविन्दु नं० ४

Silver proteinite

प्रोटीनगोल

१ औन्स

उम्दा गुलाब जल Rose water

२ पौंड

दोनों का मिश्रण तैयार कर बोतल में कर लो।

हर १-१ घन्टे बाद २-३ बूंद डालो नेत्राभिष्यन्द, नेत्र की लाली जलन व कड़क पर बहुत फायदा करना है पर याद रहे १ हफ्ता लगातार डालने पश्चात् फिर १ हफ्ता नहीं डालना चाहिये। बर्ना आंखें कुरूप हो जावेंगी। विशेष कर बच्चों के लिये ये बहुत मुफीद है और दवा आंखों में डालते ही शीतलता लाती है। लाली तथा रोगी को तत्काल चैन देती है बाज २ बालकों को १ या २ बार के डालने मात्र से ही फायदा नजर आता है इस दवा का विशेष गुण ग्रीष्म व शरद कालिक नेत्राभिष्यन्द पर होता है। वर्षा व हेमन्त ऋतु में इससे कम फायदा देखने में आया है। तथा कभी हुई दवा कभी खराब नहीं होती।

## नेत्राविन्दु नं० ५

## Eye Drop Lotion No. 5

बोरिक ऐसिड

४० ग्रैन

कास्टिक

१० ग्रैन

उम्दा गुलाब जल

४ औन्स

उपरोक्त सब द्रव्यों का मिश्रण तैयार कर हर दूसरे घन्टे में २-३ बूंद डालो।

गुण—नेत्राभिष्यन्द सुखी व जलन पर शीघ्र गुणप्रद है।

## नेत्राभिष्यन्द पर

## Zinci Oxide

(१) जिंक ऑक्साइड १-२ ग्रैन माता के दूध में घोल आंख पर डालो दिन को २-२ मरतवा डालो यह नेत्र रोगों पर उत्तम है विशेष कर नेत्राभिष्यन्द पर।

(२) नेत्रों के रोगों—लाली जलन व कड़क पर माता का दूध बार बार आंखों में टपकाना चाहिये।

(३) शुद्ध रसौत

१ औन्स

गुलाब जल

४ औन्स

शुद्ध फिटकरी

१ औन्स

सबका एकत्रित मिश्रण दिन के दो तीन बार आंख में डालो इस योग से शीतऋतु व वर्षाऋतु की आंख दुखनी (नेत्राभिष्यन्द) शीघ्र अच्छी होती है पर दवा जरा लगती है।

(४) मण्डा मार्का गुलाबी रंग, शुद्ध फिटकरी, बोरिक ऐसिड, भीमसेनी कपूर सबको बराबर ले १ प्रहर खरल कर शीरी में रखलो इसे शुद्ध शीशे की सलाई से आंख में आजने से आंखों

का दुखना लाली व आंखों के कई रोग दूर होते हैं पर दवा लगती बहुत है। ५ वर्ष से कम उम्र के बालकों पर इसे प्रयोग नहीं करना चाहिये। योग उत्तम है।

(५) श्वेत गुलाब के फूल का स्वरस ले—  
किञ्चित् शुद्ध फिटकड़ी मिला आंख में डालने से

आई आंख अच्छी होती है। यह कुछ कम लगती है व अच्छी है।

(६) नीम पत्र स्वरस में शुद्ध फिटकड़ी मिला आंख में २-३ बूंद डालने से नेत्राभिप्यन्द नष्ट होता है, दवा लगती है।

अन्धे भी देखने लगे !

डाक्टर गुप्ता के १४ वर्षों के परिश्रम का फल

“हिमांजन,,

( Sight-Improver )

मोती, ममीरा, मूंगा, सोना, चांदी, भीमसेनी कपूर और यशद भस्म तथा चमगादर भस्म इत्यादि बहुमूल्य एवं खेराये हुए, कड़ू दाने, मयूर पृच्छ, मह पित्त रिच्छ, पित्त, तेंदुआ रक्त, काक, चड़ियाल, अजा, बुलबुल, तीतर, चिमगादर और गोह इनके विष्टा इत्यादि अलभ्य पदार्थों तथा अवाचित मांस रस, मानव नख, दन्ताने फील, तथान्य महौषधियों और चमत्कारिक जड़ी बूटियों के संयोगसे यह आंखों में लगाने का अञ्जन तैयार किया गया है जिसमें त्याम सर्प वसा और ११ वर्ष पर्यन्त नीम दरुस्त में रखा हुआ मुर्मा भी सम्मिलित है इसके व्यवहार से नेत्र ज्योति आजन्म स्थाई रहती है और मोतियाबिन्द इत्यादि नेत्र सम्बन्धी सभी रोग नाश होते हैं मेरा वैद्य बांधवों तथा सर्व साधारण से परीक्षार्थ अनुरोध है। मुख्य प्रचारार्थ एवं परिज्ञार्थ १) (नमूने की शीशी) “जीवन-सुधा” के माहकों से ॥)।

यदि आप या आपका कोई सम्बन्धी किसी ऐसे रोग के फौलारी पंजे में जकड़े हुये हैं जिस से छुटकारा पाना असम्भव हो गया है तो हमारे यहां पूर्ण वृत्तान्त लिख उत्तरार्थ -)॥ का टिकट भेज व्यवस्था सुप्त प्राप्त करें।

पता:—

दि लक्ष्मण मेडिकल हॉल रसरा यू० पी० (ब्रांच महेन्द्र-पटना, )

## हे शिशु !

रचयिता—श्री धरणीधर शर्मा शास्त्री आयुर्वेदाचार्य कन्नडा, मिर्जापुर ।

सुनि तव तोतर बात,

पवि हियहू हुलसात ।

आनंद-कानन-नेह-नहाते,

आशा मलय समीर बहाते,

सुख-वसन्त पितु हिय उभंगाते,

जब मधुरी मृसकात,

सुन तव तोतर बात ॥१॥

चंचल चखन चपल चित् किलकत,

इत-उत भ्रष्ट मगन मन धिरकत,

निर्निमेष वत्सलता निरखत,

परसि प्रफुल्लित गात ।

सुन तव तोतर बात ॥२॥

वीर युवा बनि कीर्ति कमाते,

अरिमुख दारि रण रङ्ग मचाते,

स दृशाली कुटुम बनाते,

जनि जननी पुलकात ।

सुनि तव तोतर बात ॥३॥

होगा भावी देशोत्थान,

पितरों को दोगे जलदान,

तुम से हैं कन्याण महान् ,

आओ सुख मय तात ।

सुनि तव तोतर बात ॥४॥

दर्शन, काव्य तर्क विज्ञाना,

बढ़ो, लहो, जग यश सन्माना,

अन्य देश को शिष्य बनाना,

हो ऋषियों की जात ।

सुन तव तोतर बात ॥५॥

हे

शिशु

# शिशुपालन और हमारी भूलें

(लेखक—कविराज श्री शिवशरण जी वर्मा, फगवाड़ा)

प्रिय पाठक वृन्द !

शिशुओं की शोचनीय दशा आप से छिपी नहीं है। हमारे बच्चों का स्वास्थ्य दिन प्रति दिन गिर रहा है। रोग बढ़ रहे हैं। आप तनिक ध्यान से देखें तो मालूम होगा कि इनकी मृत्यु संख्या पहले से बहुत अधिक है। भारतवासियों की अधोगति के कारणों में शिशुपालन में की गई भूलों को भी शामिल किया जा सकता है। मेरा यह सदैव प्रयत्न रहा है कि वैद्य सम्मेलनों में पधारने वाले वैद्यों के सम्मुख इसका सही सही फोटो खींचा जावे। सम्मेलनों में सभी का अधिक ध्यान वृंटी प्रचार, मिश्रयोग मुनने वा मुनाने अथवा अनावश्यक प्रस्तावों के पास करवाने की ओर ही लगा रहता है। स्त्रियों व बच्चों का शारीरिक अधोगति की ओर बहुत कम ध्यान दिया जाता है। यही कारण है कि सम्मेलनों में साधारण जन समूह अधिक भाग नहीं लेते। सम्मेलनों के साथ २ बच्चों की नुमायश का भी प्रबन्ध होना चाहिये, ताकि वहां पर गृहस्थियों को बहुत उत्तमता से व सरलता पूर्वक शिशुपालन पर शिक्षा दी जा सके। माताओं को उनकी भूलों से आगाह किया जावे। आशा है आप इस सम्मति को पसन्द करेंगे। मेरा विचार है कि आगामी वर्ष फगवाड़े में जब पंजाब प्रान्तीय वैद्य सम्मेलन का अधिवेशन होगा तो मैं इस प्रोग्राम को अमली जामा पहनाऊंगा। इस वर्ष परोपकार सेवा समिति फगवाड़ा के वार्षिकोत्सव पर मैं इस प्रोग्राम की

पेश किया था। जनता ने इसे बहुत पसन्द किया, कोई ८० बच्चों की शारीरिक परीक्षा की गई उन ८० बच्चों में से केवल १५ बच्चे ऐसे निकले जो कि सहा २ मानों में स्वस्थ व सुन्दर कहे जा सकते थे। मेरा विचार था कि शायद स्त्रियां अपने बच्चों को नुमायश में लाकर तुलवाने व परीक्षा करवाने से हिचकचावें। परन्तु मेरा खयाल उल्टा निकला। हमारी देखा देखी फगवाड़े की निकटवर्ती आर्य समाजों के वार्षिकोत्सवों पर भी इसी प्रोग्राम को अपनाया जाने लगा है। बच्चों के पालने का विषय बड़ा सरल व सुगम समझा जाता है पर यदि वास्तव में सोचा जावे तो मानना पड़ेगा कि यह विषय बड़ा विकट बड़ा ऐसीसा और बड़ा ही जिम्मेवारी का है। नव मातायें तो इस में सर्वथा अनभिज्ञ होने के कारण बच्चों के लिये अधिक हानि का कारण बन जाती हैं। नव-जान बच्चों की देख रेल प्रत्येक प्रकार से करनी पड़ती है। श्चतु का खयाल, आहार का खयाल, वस्त्रों का ध्यान, शुद्धताई का खयाल, बच्चे के मिजाज का ध्यान तथा अन्य रोगों का ध्यान रखना आवश्यक होता है। माताओं को मट मालूम करना होता है कि बच्चे को किसी प्रकार का कष्ट अथवा पीड़ा तो नहीं, रात्रि को उबर तो नहीं हो जाता। कहीं कर्ण पीड़ा तो नहीं। क्या पाखाने का रंग ठीक है। इत्यादि इत्यादि। आप तनिक साधारण लोगों के घरों में जाकर देखें पता चलेगा कि उनके मकानान में न तो शुद्ध वायु के

प्रवेश के लिये कोई झरोका ही है और न ही धुआं निकलने के लिये चिमनी। बच्चों व माताओं को मकानों की निचली मंजिल में सीले व अन्धेरे कमरों में जीवन व्यतीत करना पड़ता है। सील धुआं व गंदा वायु शिशु व प्रसूता पर बहुत बुरा प्रभाव डालती है। बच्चों के बीमार होने पर किसी योग्य वैद्य से मलाह लेनी अनावश्यक समझी जाती है। आप विदेश के बच्चों के स्वास्थ्य पर खयाल दोड़ाइये वहां लाखों रुपया बच्चों को खूबमूरत व स्वस्थ बनाने वाले नियमों के प्रचार पर लगा दिया जाता है। वहां के लोग ठोस कार्य करते हैं। इन्हीं अभिप्राय के लिये बड़ी २ सभायें स्थापित हैं वे सभायें प्रयत्न करती हैं कि ग्रामों में जाकर स्त्रियों को इन सब बातों के सम्बन्ध में आगाह करते हैं। हम हम को एक कम से भूल गये हैं। माना कि बड़े बड़े शहरों में सरकारी तौर पर बच्चों की नुमायश का प्रबन्ध होता है। परन्तु वहां पर जनता पर पाश्चात्य चिकित्सा प्रणाली का प्रभाव डाला जाता है। आयुर्वेद को न तो ऐसी होने वाली नुमायशों से लाभ है और न लोगों के दिलों पर आयुर्वेद चिकित्सा प्रणाली के लिये किसी प्रकार का लगाव व प्रेम ही पैदा होता है। हमारे समझलन तब तक सफल नहीं कहलाये जा सकते जब तक कि साधारण स्त्री पुरुष हमारे प्रोग्राम से लाभ न उठा सकें। मेरी हार्दिक इच्छा है कि इस अपील को प्रत्येक हृदय तक पहुंचाया जावे। मैं इसे क्रियात्मक रूप में देखना चाहता हूं।

बच्चों की बढ़ती मृत्यु संख्या के कारणों को कई भागों में विभक्त किया जा सकता है, तथापि इनका संक्षेप निम्न प्रकार इसका एक मुख्य कारण है।

उन्हें ज़रूरत से कम या अधिक खिलाना पिलाना, वे समय खिलाना पिलाना, दोषयुक्त आहार दूधादि का देना, उन्हें उचित समय से पूर्व ही अन्नादि का देने लग जाना, मिट्टी खाना, दूध में खांड़ का प्रयोग अधिक करना अथवा बिलकुल ही न करना इत्यादि २ ऐसी बहुत सी बातें हैं कि जिसके कारण बच्चे का शरीर दुर्बल होना शुरू हो जाता है। कमजोरी दिन प्रति दिन बढ़ती रहती है। यहां तक कि वह सूख कर कांटा सा हो जाता है। उनकी शक्ति अत्यन्त ढरावनी मुरझाई हुई, प्रांवा पतली, टांगे कमजोर, रंग पीला, व अंग ढोल पड़ जाते हैं। पाचने का समय स्थिर नहीं रहता। प्रायः कब्ज रहता है। पचाना हरा पीलासा, अथवा भूरा, या श्वेत व चिपकने वाला लेसदार होता है। अन्न का अनपचा भाग इसमें अधिक होता है। माताये प्रेम वश अधिक दूध उन्हें पिला देती हैं। जिस का नतीजा बड़बड़मी होता है। माता के अस्वस्थ होने से अथवा उसके अधिक समय तक दूध पिलाते रहने से वह दूध बच्चे के शरीर के लिये आवश्यक अवयव पहुंचाने के अयोग्य होता है। पिलायता दूध के ढिबरे लाखों की संख्या में भारतवर्ष में विकते हैं। साधारणतया समझा जाता है कि उक्त ढिबरे बच्चों के लिये लाभकारी होते हैं पर यदि अधिक दान शीत से काम लिया जावे तो वह शत ने प्रयोजनीय सिद्ध नहीं होते जितना कि गाय का ताजा दूध अथवा घात्रो य माता का अपना दान। उनके आवश्यक अवयव (व्हाइटमीन) बहुत घटे हुये होते हैं। उनसे पच हुये बच्चे इससे मजबूत नहीं होते।

बच्चों को बिस्कुट खिलाने का रिवाज दिन प्रति दिन बढ़ रहा है। बड़े बच्चों के लिए तो यह इतने हानिकारक नहीं पर दो वर्ष से नीचे की आयु वाले बच्चों के लिए बहुत बुरे साबित होते हैं। इन में निशासता अधिक होता है। और वह बहुत देर से पचता है। छोटे बच्चों के दांत नहीं होते और उनका आमाशय कोमल होने के कारण ऐसे भारी पदार्थ का आत्मीकरण नहीं कर सकता। तब हाजमे का खराब हो जाना अनिवार्य ही है। निधन गृहस्थो अपनी आर्थिक-वस्था के कारण दूध का यथेष्ट प्रबन्ध नहीं कर सकते। दूसरी ओर धनाढ्य व्यक्ति भी इस दोष से मुक्त नहीं हैं। वे दूधके साथ २ मक्खन खोया मलाई का अधिक प्रयोग करते हैं। अतः दोनों श्रेणियों के बच्चे बीमार रहते हैं। यह कहा जा सकता है कि ग्रामों में बच्चे तनिक स्वस्थ व भारी वजनी होते हैं उसका कारण वहां की खुली वायु है। यदि शहरी बच्चों का भी खुली वायु में रोजाना घुमाने का प्रबन्ध हो जाय तो यह कमी बहुत हद तक पूरी हो सकती है। ग्रामों की गन्दगी मैले के देर, इस प्रोपाम में बाधा डाल सकते हैं। इस बात के लिए वहां के लोगों में प्रचार की आवश्यकता है कि ऐसी गंदगी व बेगदि फलांरोग का कारण हो जाते हैं। शीतला, ममूरिका, विषैले ज्वर, मलेरिया, प्लेग हैजा, पेचिश ऐसी ही बातों से पैदा होते हैं। अमीर गृहस्थियों के बच्चों की खुराक में यदि कार्बोहाईड्रेट ग्लाइड का भाग बढ़ा दिया जावे और गरीब बच्चों के आहार में कार्बोहाईड्रेट को कम कर दिया जावे तथा वसा का भाग बढ़ा दिया जावे तो

आमाशयिक रोगों की दशा कुछ सुधर सकती है। ये अमीर बच्चे जो अधिक मक्खन मिठाई के खाने के कारण खूब फूले हुए मोटे २ दिखाई देते हैं वास्तव में इतने मजबूत नहीं होते। वे शीघ्र थक जाते हैं और शीघ्र २ वमन दस्त ज्वरादि रोगों में फंसे रहते हैं। उनके माता पिता सदा ही डाक्टरों की राय से माईपवाटरादि औषधियों का प्रयोग करते २ उनके मेदे को एक तरह से दुर्बल बना डालते हैं लेकिन असली कारण की ओर ध्यान तक नहीं देते। उनके आहार में यदि ग्लाइड का भाग बढ़ा दिया जावे तो आमाशय तनिक ठीक सा हो जाता है। पर यह देखने में बात आती है कि ग्लाइड के अधिक देने से चुनमुने पैदा हो जाते हैं पेट में जलन हो जाती है और अफारा हो जाता है।

अतः ऐसी दशा में गन्ने को ग्लाइड न देकर अंगूरी शकरा अथवा ग्लूकोज देनी चाहिए। दूध में यदि मुनस्का के दो तान दाने उवाल कर डाल दिये जावें तो भी बच्चे को बहुत लाभ पहुंचता है। पर कभी-कभी का दूध देना भी लाभकारी होता है। अफारा हटाने के लिए मोए का पानी दूध में डाल देना चाहिए। मानाये यदि तनिक ध्यान से काम लें तो बच्चों की बीमारियां उनके आहार का ख्याल रखने से ही दूर हो सकती हैं। पर हमारी मातायें असली कारण पर ध्यान न देकर धागे तानीय पर अपना विश्वास जमाए रहती हैं। इसमें माताओं का दोष भी क्या है जब उनको इस बात का पता ही नहीं है कि आहार के दोष से भी बच्चे बीमार हो सकते हैं तो वह बहुत हद तक इस बात से

## सर्व बाल रोगों पर सर्वोत्तम स्वादिष्ट अर्क

(ले०—डा० के० डी० तलनिवां मिश्रणाचार्य अलमोड़ा)

चूना कलाई त्रिना बुझा हुआ) ढाई २॥ सेर चीनी (दानेदार बूरा-शर्करा) ढाई ५२॥ सेर अमलतास (गुदामात्र नया) पाव सेर-२० तो० हरब व शूद्र टंकण—१५-१५ तोला गुलबनफशा, सौंफ स्वेतजीरा, गुलाब के फूल, उन्नाब, वायबिडिंग, मुनक्का (द्रोणा) सौंठ आठों १०-१० तोले, मुलैट्री, पीपल छोटी काकड़ासिंगी तीनों ५-५ तोले, अतीस, मत्व नीबू दोनों १॥ २॥ तोले, इत्रगुलाब, चन्दन तेल, सत्व नौसादर, तेल दाल चीनी, १-१ तोला, कापूर देशी, फूल पोदीना (पेपरमिन्ट) ६-६ मांश, सत्व अजवायन ३ मांश Tinet-Capsicum टिन्चर कैप्सीकम एक ड्राम Spt Choloroform रिपार्ट क्लोरोफार्म चार ड्राम Acid HydroCyanic dil. पेंसिड हाइड्रो स्यानिक डिल दो ड्राम।

विधि—चीनी, इत्र गुलाब, पिपरमेन्ट, कापूर, सत अजवायन, दोनों तेल, मत्व नीबू,

बरी ठहराई जा सकती हैं। इस बात के योगी हम स्वयं हैं जो इधर ध्यान तक नहीं देते। यह बल पूर्वक कहा जा सकता है कि हमारे बच्चों की मृत्यु संख्या दिन प्रति दिन बढ़ रही है, और बढ़ती रहेगी। अतः यही निवेदन है कि इसकी रोक थाम के लिए आवश्यक कदम उठाना चाहिए।

सत्व नौसादर, टिन्चर कैप्सीकम, स्पिरिट क्लोरोफार्म, पेंसिड हाइड्रो स्यानिक डिल, इनको छोड़ शेष सब वस्तुओं को जौकूट कर लो। चूने को साफ घोटते १॥५ मन पानी में बुझालो। चूना घंटे-घंटे बाद एक बड़ी कलाईदार करछी से हिलाइये ऐसा १० बार करके ३ घंटे बाद चूने के ऊपर जमी हुई मलाई फेंक दें। पानी धीरे कलाईदार एक बड़े डेग या मिट्टी के सटके में डाल जाँकूट वाली औषधियाँ भी डाल दे व हल्की आंच से पकावे अष्टमांश क्वाथ शेष रहने पर साफ कपड़े से तीन मरतबा छान २॥ सेर चीनी मिला पुनः आंच दे। एक तार की चश्मानी हो जाने पर उतार ले व शीतल हो जाने पर पुनः छान लोबू सत्व व नौसादर मत्व का महीन चूरा मिला रख दे। दो रोज तक घंटे-घंटे भर बाद दवा हिलाते जावे परचात ७ रोज तक दवा के बरतन को न हिलावे फिर नवें रोज बाद ऊपर का अर्क या तो पिचकारी से खींच ले या धीरे से निधार ले। नीचे का जमा काँक उसमें न मिलने पावे। अब इस अर्क में कापूर अजवायन पेपरमिन्ट का पिचलाया हुआ अर्क और टिन्चर कैप्सीकम, स्पिरिट क्लोरोफार्म, पेंसिड हाइड्रो स्यानिक डिल, गुलाब इत्र, तेल चन्दन व तेल दाल चीनी मिला कागदावर शीशियों में भर ले।

गुण—यह बच्चों के सर्व रोगों पर उत्तम है।

## दुग्ध वर्द्धन का अनुभूत योग

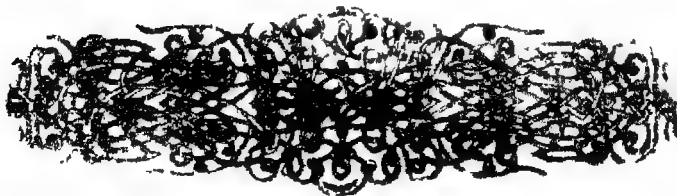
शतावर उत्तम	511	शालव पञ्जे की	511
असगन्ध	51	मूसली स्वेत	5=
मूसली स्याह	51	बीजवन्द काले	51
सौंठ	51	* गोला (खोपड़ा)	511
* छुहारा	51	* वादामगिरी	511
नागकेशर असली	5=	* पिस्ता	5=
* टाजा बीज रहित	5१	जायफल	5=
लौंग	१ तोला	पीपल छोटा	१ तोला
मिर्च काली	२ तोला	त्रिफला	5=
अष्टवर्ग (निश्चित)	511	क्षीर बिड़ारी कन्द	5६
वहमन स्वेत	51	* शहत	5२
* मिश्री	5५	* बी गाय का	511
* स्वर्णकर्क	१ तोला	तालमसवाना	5=
कमलगड़े	5=	सिंघाड़े	5=
गोक्षुर बड़	5=	* सन्ध गिलोय	5=
* ताजा खोवा	5२		

**निर्माण विधि—**(\*) इस निशान की वस्तुओं को छोड़कर अलग अलग मुखा कूट कपड़ धुन कर ठीक ठीक तोलकर एक पात्र में करने जावें।

फिर शहद, मिश्री, घी, खोवा को छोड़ सब शेष समान की सिल बट्टे पर पिट्ठी कर लो। पश्चात् इसे भी चूर्णों पर खूब मिला लो। अब ताजे खोये की घी में इतना भूनों कि बादामी रंग का हो जाय पर जलने न पावे पश्चात् जमीन में चामनो को उतार मिश्री का चूग मिला लो जब मिश्री पिघल जाय तो उपरोक्त चूर्णादिक द्रव्य मिला खूब घोट लो। याद रहें शहद चासनी व दवा के शीतल होने पर ही मिलाया जावे। अब २-२ तोलें के लड्डू बांध बाहर से याद चाहो तो चांदी के बर्क लपेट दो।

**मात्रा—**१ लड्डू, पाच मग धारोष्ण गोदूध के साथ यदि धारोष्ण दुग्ध न मिले तो स्वच्छ उबाला हुआ दूध ही पर्याप्त है।

**गुण—**माता की काफ़ी दूध उत्प्रेरणा निर्वलता दूर हा पाँष्टिकता आवेगी तथा रक्त का मञ्चार होगा दिल दिमाग को पूर्ण ताश्गी मिलेगी प्रसूता के सर्व रोग दूर हों आनन्द प्राप्त होगा तथा ये दुग्ध वर्द्धक लड्डू पाने में आन्यन्त स्वादिष्ट होंगे। तथा बालक को भी इसके सेवन से अलिप्त शुद्ध दुग्ध मिलेगा।







## “जीवन-सुधा के शिशुरोगविज्ञान का सम्पादकीय

### शिशु पालन

वैद्यक चिकित्सा के सुविख्यात पत्र जीवनसुधा का शिशु रोग-विज्ञान अङ्क पाठकों के सामने है। विद्वान् लेखकों ने बालरोग सम्बन्धी और शिशु पालन विषयक बहुज्ञान मंडलित लेखों से पत्र के इस विशेषांक की ओर वृद्धि की है। आगे चल कर पाठक उन्हें खुद ही पढ़कर उनसे लाभ उठावेंगे।

शिशु पालन और शिशुओं की व्याध सम्बन्धी ज्ञानकारी पुस्तकें आज तक हिंदी भाषा में दुर्लभ क्या नहीं के बराबर हैं।

शिशु पालन के लिए जो कोई स्वास्थ्य ज्ञान और विद्या की आवश्यकता है यह बात कम से कम हमारे देश में किसी ने भी नहीं सोची।

हमारी मानाओं को तो शिशु पालन विषयक परमात्मादत्त प्राकृतिक ज्ञान के सिवाय और कुछ माध्यम ही नहीं। पहले जमाने में शायद हमारी पूर्वजायें कुछ जानती थीं, लेकिन आजकल की लड़कियाँ इन बातों से इतनी अनभिज्ञ हैं कि देखने में दुःख माध्यम होता है। आजकल भले ही लड़कियों के स्कूल और कालिजों में ज्योमेट्री, बीजगणित और गूगल की काफ़ी शिक्षा मिले, इतिहास की बड़ी पढ़ाई रात दिन रट के याद रखें लेकिन गरीबी की जीवन मरण समस्या मातृत्व और शिशु पालन सम्बन्धी ज्ञान प्राप्त करने का

कोई साधन नहीं। इस लिए ऐसे २ पत्रांक जिसमें इन विषयों पर सुप्रकाश डाला गया है। हमारे लिए विशेषतः स्त्रियों के लिए और शिशु चिकित्सकों के लिए परमावश्यक है।

मानव जाति का सार धन शिशु है। जिस देश और जिस जाति में स्वस्थ सबल और सुसन्तानों की जननी न हो तो उस जाति का धरातल से बिलुप्त होना अथवा निर्बल बनकर पराधीन और गुलाम होकर ज़िन्दगी विताना सुनिश्चित है। भारतवर्ष में सन्तानों की जन्म संख्यामें कोई कमी नहीं है। लोक संख्या दिन पर दिन बढ़ती जा रही है।

बल्कि ३३ करोड़ से साढ़े पैंतीस करोड़ हो गये। भारत में शिशुओं की जन्म संख्या तथा मृत्यु संख्या में कोई कमी नहीं है। यहाँ पर साधारणतया एक-दो स्त्री एक बेटे-दो बच्चों भी कुछ ज्यादा नहीं समझे जाते हैं। अधिक सन्तान बतीको भाग्यवती करके ही मानते हैं। निःसन्तान नारी तो समाज और परिवार में घृणा और अश्रद्धा से देखी जाती है। “पुत्रार्थ कियते भार्याः” यह एक संस्कृत कहावत है। पुत्र भारतीय जीवन का गृहस्थाश्रम का चरम लक्ष्य है, पुत्र ही पिन्डदाता नरक त्राता, पुत्र जनक जननी के परम सुख का कारण है। अतएव सन्तान प्राप्ति के लिए भारतीय नारियाँ जो कुछ करती हैं और कर सकती हैं सो भी थोड़ा है। निःसन्तान

नारियों का देव पूजन, बार व्रत नेम आचार, तीर्थ, जप मंत्र करना यहां कौन नहीं जानता है ? लेकिन उन्हीं गोदी के लाल आँखों के तारों को किस ढंग से पालन करना होगा। किस प्रकार परवरिश करने से वह वन्दुरुस्त लकड़बगर और हर क्रिस्म की बीमारियों के शिकार न बन कर सुखी जीवन व्यतीत कर सकते हैं इसी ज्ञान की अपूर्णता भारत के हर प्रान्त की स्त्रियों में है। सन्तान प्राप्ति के लिए उन्हें जिवने रकम बेरकम के धर्माचरण सिखाई जाती हैं। सन्तान पालन के लिए कहीं शतांश से एकांश भी वह नहीं जानती हैं। यह उनका दोष नहीं है। यह हमारा दोष है। शिशु पालन, चिकित्सा विज्ञान का ही एक विभाग है। देश की चिकित्सक मण्डली को चाहिये कि सन्तान पालन और शिशु रोग चिकित्सा सम्बन्धी बातों पर प्रकाश डाल कर जन साधारण का उपकार करें।

शिशु जन्म के बाद नहीं बल्कि गर्भस्थ होने के दिन से ही शिशु की प्रकृति पालन पर ध्यान देना चाहिये। स्वस्थ माता पिता की सन्तान ही स्वस्थ होते हैं। दूषित रोग प्रस्त माता अथवा पिता को सन्तानकी आशा करना व्यर्थ है। अतएव हर एक सन्तान कामी मनुष्य को अपनी सेहत के बारे में ध्यान रखना चाहिये। पितृ रोग, जिसमें फिरंग रोग (Syphilis) सर्व प्रधान है प्रधानतः यौवनावस्था के अत्याचार का फल है इस रोग में सूजाँक की भाँति लोग निःसन्तान नहीं बनते, अपितु अधिक सन्तान, और विशेषतः रोग दूषित विकृत सन्तान उत्पन्न होती हैं। इस रोग में अधिकांश गर्भ नष्ट भी हो जाता है।

इस रोग से प्रस्त पिता को सन्तान बलवान और स्वस्थ होती प्रायः असम्भव है। गूंगा, बहारा बनना दिमागी कमजोरी हड्डियों और प्रस्थियों की बीमारियाँ लेकर आजीवन दुख भोगना उनके लिये मानो कर्म फल चुकाना है।

इस रोग की चिकित्सा आजकल बड़ी आसानी से हो सकती है। अस्तु उक्त रोग प्रस्त व्यक्ति पिता अथवा माता बनने से पहिले भावी सन्तान की कल्याण कामना से अपने को निरोग बना ले, वरना इनके लिए निःसन्तान ही होना अच्छा है। तपैदिक भी वैसा ही और एक भयंकर रोग है जो वंशगत व्याधि समझी जाती है। आज कल अवश्य तपैदिक (यक्ष्मा) आँवाँ हवा के दोष से जनाकीर्ण शहरों में बहुत होते लगा है, लेकिन वंशगत होने के कारण सन्तानों पर शीघ्र आक्रमण करना सम्भव है। मूढ़ा, मृगी, वात व्याधि आदि भी वंशगत रोगों में शामिल हैं।

वंशगत रोगों को छोड़कर गर्भावस्था में भी माता के स्वास्थ्य के अनुसार सन्तान दीर्घायु, क्षीणायु वलिष्ठ, अथवा निर्बल हो सकती है। गर्भावस्था में माता का खाद्य, वस्त्र, परिश्रम, विश्राम, रहन-सहन आदि सभी बातों का असर भावी संतान पर होता है। अतएव सुसन्तान प्राप्ति के लिये पहला कर्तव्य है गर्भवती माता की हिकाजत करना। गर्भकालीन अवहेलना की वजह से कितने अकर्मण्य, चिर रोगी जन्म लाभ करके वृथा भार से जगत को सताते हैं इसका क्या कोई ठिकाना है ? गर्भिणी की शुश्रूषा की ओर काफ़ी ध्यान देना चाहिये। आजकल हर सम्भव देश में गर्भावस्था में शिशु पालन

(Cantenetal clinics) के ऊपर बहुत जोर दे रहे हैं। हमारे देश में भी वैद्यक ग्रन्थों में गर्भोपचार के विभिन्न अनेक प्रकार के नियम समय और पान भोजन की व्यवस्था है। अगर हम उन्हें न पालन करें और दुःख उठाये तो दोष हमारा ही है। जमीन की शक्ति लेकर ही तो बीज पैदा होकर शक्तिशाली वृक्ष बनता है। क्षेत्र ठीक नहीं हो तो फल कैसे ठीक होगा। माता का शरीर ही असल क्षेत्र है। मातृधर्म पालन करना प्रत्येक सुसाता का कर्तव्य है।

गर्भिणी चिकित्सा नारीरोग चिकित्सा का एक प्रधान अङ्ग है। गर्भ कालीन उपचारों को हर बालिका को सिखाना जरूरी है। बालिकाओं के स्कूल कालेज की पाठविधि से अन्य विषयों को हटा कर मातृ भाषा में जननी उपयोगी विषयों को सिखाना शिक्षा विभाग का कर्तव्य है। माता और शिशुओं के ऊपर ध्यान न देने तक हमारी जाति की प्राकृतिक उन्नति होना सर्वथा असम्भव है।

शिशु जीवन तीन भागों में बांटा जा सकता है। (१) गर्भ कालीन (Cautenatal) (२) शिशु कालीन (Infantile) (३) बाल्यावस्था (Childhood)। गर्भकालीन जीवन तो दशचान्द्र मान मास यूँ साधारण भाषा में नौ महीना दश दिन है। यह नौ महीना दश दिन माता के शरीर के रक्त से ही शिशु का पालन होता है। इन दिनों माता के शरीर की रक्त शुद्धि के ऊपर ही सन्तान का भावी समुदाय जीवन निर्भर है। गर्भ कालीन माता की हरेक पीड़ा का प्रभाव शिशु के ऊपर होता है। यूँ भी देखने में आता है कि बसन्त मोतीभरा आदि रोग का गर्भवस्था शिशु के ऊपर भी

प्रकोप हुआ है। इसलिए जहां तक बने माता को नीरोग स्थान में शुद्ध वायु युक्त कमरों में आनन्द पूर्वक संभोगी जीवन बिताना चाहिए। अतिरिक्त नरस्त्रियों चीजों को बरतना। अधिक मैथुन, अश्वत्थ परिश्रम, रंज, क्रोध, गुस्सा, गर्मी इन बातों से सन्तान रोगी और विकलांग पैदा होती है। अगर शारीरिक वैकल्य न भी हो तो मानसिक विकृति, कुस्वभावी होना तो अधिक सम्भव है। गर्भावस्था में अभिमन्यु की जननी और नेपोलियन की माता युद्ध कथा श्रवण करती थीं और उनके अभिमन्यु और नेपोलियन जैसे बोर सन्तानों की उत्पत्ति इतिहास प्रसिद्ध है। माता जो कुछ करती हैं, जो कुछ सोचती हैं और जो कुछ बोलती हैं सभी बातों का असर सन्तान पर कुछ न कुछ होता है। भारतवर्ष में सन्तानों की कमी नहीं है। लेकिन दीर्घजीवी सुसन्तानों की खास कमी है। हर साल एक एक बच्चा जन देना और बाद में उन्हें अपने भाग्य से ही बचने के लिए छोड़ देना पशुओं का भी धर्म नहीं है। पशु सन्तान से मनुष्यसंतान जन्म समय में अधिक निसहाय और अपनी रक्षा करने में सर्वथा असमर्थ ही होती है। इसलिए मनुष्य जैसा बुद्धिमान प्राणी अपनी सन्तान के लिए हर विषयों को तैयार रखता है। माता के पास नौ महीने का समय है। इस नौ महीने के अन्दर भावी संतान के लिये सब कुछ तैयार रखना कर्त्तव्य है। बाज घरों में संतान प्रसव के समय मैंने देखा है एक टुकड़ा साक कपड़ा, एक लोटा गरम पानी का भी मिलना मुश्किल हो जाता है। सिर्फ अशिक्षित घरों में नहीं 'पढ़े' लिखे अच्छे २ परिवारों में भी यह बातें होती हैं। मानो संतान

प्रसव जैसी एक अचानक दैवी घटना है ? यह क्या कम मूर्खता है ? इस देश में छूतछात का बहुत परहेज है। अतएव प्रसूति घर में छूत छात की असम्भव प्रकार की व्यवस्था होती है। गर्भ कोई रोग नहीं है। सन्तान प्रसव भी कोई बीमारी नहीं। छूत की असली बीमारी मोतीभारा चेचक, हैजा, तपेदिक से लोग इतना परहेज नहीं करते हैं, जितना कि मामूली जापे में परहेज और छूतछात का वृथा आडम्बर फैला देते हैं, जिस से कभी २ प्रसूता और नवजात शिशु का भी जीवन संशय में हो जाता है। जापे के हरेक काम मैल और गन्दगी से भरे होते हैं। घर के जितने बेकार और मैले २ कपड़े तथा घर का सब से छोटा अन्धेरा वगैर ताजी हवा का कमरा, नीच जाति की धाय, फिर हजारों किस्म के रस्म रिवाजों की जकड़बंदी में भारतीय लालों के जन्म का शुभ मुहूर्त प्रारम्भ होता है। यह जन्म स्थान क्या ? कैदखाना में बंद होना जैसा है। अधिकांश घरों में भूत प्रेत के भय से प्रसूत घर वालों ने रोगों का भी इलाज न करवाके सयाने दिवाने गंडा ताबीजों की शरण में प्रसूता और शिशु को छोड़ देते हैं। शिशु का धनुषटंकार रोग जो कि आंबल ताल को मैली कैची या छुरी से कतरने से होता है, उसका कारण भूतों का ही उपद्रव बतलाया जाता है। वैसे ही (nickets) मुत्ता अथवा श्मशान रोग (बालशोष) जो कि शरीर के अन्दर उपयुक्त खाद्यभाव के कारण होता है उसे भी लोग भौतिक व्याधि समझते हैं।

जापे से जो गड़बड़ी शुरू होती है, वह आगे भी चलती रहती है। शिशुकाल में शिशु को किस

ढंग से पालन करना चाहिए, प्रायः माताएं यह जानती ही नहीं, बच्चों को समय असमय दूध पिलाना, जब रोवे जब जी चाहे स्तन दान करना माता और संतान दोनों के लिए हानि कर है। हर तीसरे घंटे में रात दिन में छै बार प्रथम छै माह के लिए ठीक है। रात को बच्चा और जल्दा दोनों को ही सोना चाहिये। रात भर बच्चे के मुंह में छाती लगा कर रखना बुरी आदत है, इससे सिवाय बद्धजमी आदि बच्चे के रोगों और माता की कमजोरी के कुछ नहीं होता, बच्चे को ज्यादा दूध पिला कर बीमार करने के बाद (Boby weter) बेबी वाटर, प्राईप वाटर, बालामृत आदि सेवन कराना, अथवा अपने दूध को खराब समझ कर छुड़वा कर छिक्के के दूध पिलाना अथवा अन्न को दे देना हमारी मानाओं का शिशु पालना विषयक ज्ञानाभाव का ही कारण है। बड़े घरानों में इन्हीं कारणों से बहुत बच्चे मरते हैं। अपने बच्चे को खूब दूध न पिला कर नीच जातीय उपमाता के हाथों सम्भाल देना फिर अपने बच्चे से उसे छुड़ा कर वह चाहे कोई भी देश में और कैसे भी बड़े से बड़े घर में हो बड़ी बुरी बात है। बच्चे को नियम पूर्वक दूध पिलाने में माता की सेहत और तन्दुरुस्ती नहीं विगड़ती है।

माता का दूध भी शिशु के लिए अमृत है। जो इस अमृत से शिशु जीवन में वंचित हुआ है वह बड़ा अभाग्य है। जिस शरीर से शिशु की उत्पत्ति होती है, उसी शरीर का सार रस दूध ही उस सन्तान के जीवन का प्रारंभिक एक वर्ष, कम से कम दान्त निकलने तक खाद्य होना

उचित है। प्रथम छै माह तो केवल स्तन दुग्ध ही पिलाना चाहिए। अगर कोई कारणवश माता का शरीर अस्वस्थ हो और वह बच्चे को अपने दूध से पाल न सके तो बकरा का गधी का अथवा गौ का दूध ही पिलाना चाहिए। उपयुक्त जल मिश्रण से यह दूध विशिष्टतः बकरी का दूध बच्चों के लिए बड़ा मुकीद होता है। मगर डिब्बे का दूध जैसा ग्लैक्मो, हरालक्स आदि हो तो उसके संग फलों का रस जैसा अंगूर, अनार टिमाटर, सन्तरा आदि का रस सेवन करवाना चाहिए। एक मास की उम्र से चाय के चम्मच के बराबर दोनों वक्त देना चाहिए। फलों के रस में 'जीवना का' (विटा मिन्स Vita mines) होती है। Vitamines शरीर धारण के लिए खाद्यों में अति आवश्यक वस्तु है। इस जीवनी का अभाव से ही मशान का मर्ज (Nichets) हड्डियां, टेढ़ी हो जाती हैं।

शिशुओं के उदर रोग और दन्तोद्भेद कालीन पीड़ाएँ होती हैं। माता के दूध में जीवनी का प्रचुर परिमाण में होना आवश्यक है। इस लिए माता के खाद्य में भी फल, ताजा दूध, मक्खन आदि होना चाहिए। खाद्य की कमी के कारण ही बहु शिशु मृत्यु होती है।

शिशु पालन में छः विषयों पर विशेष ध्यान देना चाहिए (१) खाद्य, (२) समय (३) नियम (४) विश्राम (५) वस्त्र (६) वजन

शिशु प्राकृतिक प्राणी है उसे शंकर से जो आदतें डाल दी जायेंगी, वह उसे ठीक ठीक पालन करता जायगा। जिन बच्चों को समय पर दूध पीना, नहाना, सोना इत्यादि की आदत पड़

जाती है वह नोरोग और माना को कम सताने वाले होते हैं। वे ही आदतें भविष्य में अच्छी आदतों की नींव बन जाते हैं।

खाने के अलावा बच्चों के कपड़ों के ऊपर भी काफ़ा ध्यान देना चाहिए, रंग विरंगी रेशम और नफ़ीस कपड़े और जेवरों के बजाय जो कपड़े वदन पर ठीक आजाब और आवश्यकताओं को पूरा करे वही कपड़े अच्छे हैं। अधिकांश घरों में नवजात शिशु को कुरता बगैरा पहनाना देशाचार के निरुद्ध समझते हैं, लेकिन आज बीसवीं सदी में इन देशाचारों के पीछे पड़ जाना बेवकूफी है। शिशु के जन्म से पहले ही उसके लिए कपड़ा लता बनवा कर रखना चाहिए।

हवा और रोशनी हर पेड़ पत्तों के लिए जैसी आवश्यक है बच्चे के लिए भी वैसा ही चाहिए। शरीर के ऊपर काफ़ी कपड़ा हो तो सर्दी में भी क्वाड़े खोलकर कमरे में सो सकते हैं। इन मामूली बातों को उपेक्षा करके ही लाखों श्रीमारियों में आए दिन फंसकर हमारे अनमोल लाइले लाल दुनिया से चल बसते हैं। इस लिए हर देश की जन्म और मौत की संख्या से औसतन भारत की संख्या अधिक है। जहाँ ग्रैंट ब्रिटेन और अमेरिका के संयुक्त राष्ट्रों में सैकड़ा बच्चे एक साल की उम्र में गुजरते हैं वहाँ हमारे देश में आधा से भी ज्यादा बच्चे गुजर जाते हैं। दिन पर दिन अमेरिका और अन्योन्य सभ्य देशों में जैसे सन्ताननियम के ऊपर नारियों का बड़ा ध्यान है, अगर भारत में जन्म की संख्या उसी परिमाण में कम होने लगे तो शीघ्रतया हमारी जाति का ह्रास होना सम्भव है।

आजकल के जमाने में हर साल एक २ बच्चा होना और मर जाने से कहीं सन्तति निम्न के नियमों को पालन करना ही अच्छा है।

एक बच्चे की तीन साल की आयु के पहले दूसरे बच्चे का जन्म हो तो दोनों के लिए और उनसे बढ़कर माता के लिए मौत के बराबर है। कमजोर दस बच्चों की अपेक्षा स्वस्थ सम्पन्न दो ही सन्तान अच्छी हैं।

प्राचीनकाल में स्वस्थ दीर्घायु होने के लिए लोग संयमी नियमी और ब्रह्मचारी रहते थे। होनहार सन्तान के लिए माता पिता तपस्या करते थे। आजकल वह सुनहरा अतीत स्वप्नवत है। हमने पारचात्य जाति का अनुकरण किया है तो अन्धानुकरण किया है। उनके अच्छे गुणों को तो अपनाया नहीं, उनके शिशु पालन स्वास्थ्याचार आदि का कोई असर हमारे ऊपर नहीं पड़ा है, हमने अपनाया है उनके फैशनों को, उनके सिने-माओं को, उनकी पेश की चीजों को। भारत जैसे विशाल देश में इस बीसवीं सदी में भी एक उपयुक्त शिशु-संस्था या शिशु आश्रम की शिशु शाला नहीं है, और उधर रूस जर्मनी आदि देशों में हजारों शिशु-शालायें (क्रेशें) आदि खुल गए हैं। हजारों नारियां शिशु-पालन कारिणी धात्री बन रही हैं। हमारी नारियों को ऐसे क्या काम हैं? लाखों विधवायें किस मुसौबत की रोटी खाती हैं। उन्हें बड़ी जल्दी और बहुत ज्यादा संख्या में चाहिए कि इन लोकहितकर कार्यों में हाथ बटावें। फिजूल गप्प लड़ाना, तारा, शतरंज खेलना और बहुत समय सो, बैठकर खोना मानों बड़े घरानों की स्त्रियों का उच्च कुलका अभिमान है।

पुरुष जाति के हर क्षेत्र में प्रवेशाधिकार लाभ करने के लिये कौन्सिल एसेम्बली तक में लड़ने वालियों के लिये यह तो एक ऐसा क्षेत्र है जहां पुरुषों का कोई अधिकार ही नहीं। देश और जाति को बनाने वाली माताओं का ही शिशु-पालन कार्य सबसे प्रधान और पहिला कर्तव्य है। पुरुष की जननी, पुरुष की धात्री, पुरुष को जिलाने वाली नारी-शक्ति क्या कोई साधारण वस्तु है। दुनियां अगर किसी के कब्जे में है तो नारियों के ही हाथों में है। नारी जाति अपना कर्तव्य नहीं समझ पाई है, इसलिए दुनियां में इतना द्वन्द्व और दुख है।

हमें कर्म चाहिये, कर्म में आनन्द है नारी का आनन्द शिशु-पालन में है। इसलिये शिशु-रोग चिकित्सा धीरे धीरे नारियों के हाथों में जाने लगी है। एक माता शिशु को जैसा समझ सकती है पुरुष का वैसा समझना कठिन है।

शिशुओं के रोगों में सब से प्रधान दांत निकलते समय की व्याधियां हैं। दांत निकलना शिशु-जोवन का एक संकट काल है। लेकिन दांत निकालना भी प्राकृतिक है। पहले से आहार बिहार के नियमों को ठीक तरह पालने से दांत निकलने में तकलीफ कम होती है। आज कल बिजली के नेकलेस (गुलुबन्द) बहुत इस्तेमाल करते हैं। दांत निकलते समय माता को बड़ी सावधानी से खाना पीना और रहन-सहन की ओर खूब ध्यान देना होगा। दूध के दांत जिनमें कीलें (खदन्त) सब से ज्यादा तकलीफ होती हैं निकलने के बाद शिशुत्व समाप्त होकर वास्तव जीवन आरम्भ होता है। प्रथम का तीन वर्ष काल ही बही समय है। उसके बीच माता के और बच्चे

मंतान हो जाय तो बड़ी मुसीबत की बात होती है। इसी तान वर्षकाल में बरचा बोलना जो कि मनुष्य का सर्व श्रेष्ठ गुण है मौख्यता है। अगर किसी घच्चे में बोलना आंग मुनने का कोई व्यक्ति क्रम है तो इसी रश्म में उभका जतां तक वने इलाज भी आंग लेना चाहिये।

पाप पाँच वर्ष की आयु तक पच्चे के  
थि-। पाप का शेष भाग १२ साल के अवन का  
विराम है। पाप वर्ष १२ पाप पच्चे-विद्वान्म  
करने लायक हो जाते हैं।

यह पाठ्यक्रम ही निम्न-जानत-काल है। इसमें  
जी ७३ के २२ प्रश्न बीमारियां होती हैं, वा माया-  
भाषा में ही जी ७३ के २२ प्रश्न होते हैं उनका फल  
मार्ग में जीवन होता है।

विष्णु-जात्रा के प्रधान रंगों में माता खगग, हिंदी-विष्णु, व्यापार रंग ( वालशोप ) मर्दी, जुआम, -दामय, गेचल बात (Gachal bat) प्रधान है। बाकी मनुष्य को जो कुछ रंग होत हैं, यः वे ही सब रंग और त्यागकर तपोंक शिशु को ही लगत है। ये सब के लिये बचपन में ही नाम के रंगों के अन्तर में लगे लगवा लेना अच्छा है। इससे धार का बंधन छन्दर और एक बार रंगवा ले तो और भी उत्तम है। बचपन में रंग लगाने से टीका लग जाय तो बड़ा माना का गंध बहुतपरिमाण में जाता रहता है। बचक से रंग सूरत बिगड़ जाती है। अनेक बार एक साथ अंग बिकल और बेमार भी हो जाने है। गौओं को तपैदिक बहुत होता है और बकरियों को बिलकुल नहीं। इसलिए बच्चों को बकरी का दूध तो पिलाना अच्छा है ही अगर

गाय का दूध पिलावें तो उबालकर ही पिलाना चाहिए । शिशु को जल देने में कभी रोकना नहीं चाहिये, नवजात शिशु को माँठा अथवा शहत मिला कर जल पिलाना चाहिये । रात को अथवा दिन के अन्य समय में प्यास हो तो दूध न पिलाकर जल पिलाना चाहिये, शुद्ध जल उबाल कर अलहदा सुराही में अथवा कोई पाँचकार साफ पात्र में डक कर रख लेना चाहिये ।

शिशु एक प्राकृतिक प्राणी है। उस प्रकृति के अनुसार ही पालना चाहिये अपने मनमर्जी नियमों से नहीं। फिर शिशु मूक प्राणी है। अपने रोग का कुछ कह कर बताया उसके बश में नहीं है। इसलिये शिशु की जगहों भी तथापि को प्राग्भ से ही रोग से इलाज करना चाहिये और शिशु रोगों में प्रथम चिकित्सक व अनुभवों वैंच व वाक्पों से ही चिकित्सा करा। चाहिये। भाड़ना फेंकना गंदा ताबीज ही शिशुरों चिकित्सा का प्रधान उपाय नहीं है। इन दुर्घटों के कारण शिशुओं का काल में है। बहुत हावी है। बच्चा पैदा होने के १२ घंटे में वजन लेना चाहिये। नवजात शिशु का वजन ७ से १२ पौंड याता ॥ सेर से २ सेर तक होता है। २॥ पौंड के नीचे १ वजन वाले बच्चों का जीना और पलना मुश्किल है। स्वस्थ शिशु छै मास के बाद दुगुना और एक साल के बाद तिगुना वजन का होता है ६, १२, १८ पौंड, अथवा ७, १४, २१ पौंड वजन साधारण भारतीयों के बच्चों के लिये ठीक है। दूधरे वर्ष में २८ पौंड और तीसरे वर्ष में ३२ पौंड ठीक वजन है। वजन लेने में वहम करने की कोई बात नहीं, वजन से ही बच्चे की

सेहत का ठोक २ पता चलता है ।

अतएव शिशु पालन के लिए इन दश नियमों को हमेशा ध्यान में रखना चाहिये ।

१ शिशु प्राकृतिक प्राणी है प्रकृति अनुसार उसके सब काम के लिये समय नियत होना आवश्यक है समय पर दूध पिलाना, निहालाना, सुलाना और तिलाना चाहिये ।

२ शिशु बुद्धिजीवी मनुष्य प्राणी है । उसे पशुओं की भांति पालन न करके बचपन से बैसे उसकी बुद्धि का विकास हो इस ढंग से पालना चाहिये । शिशु रंगीन चित्रों को और उजाले को बहुत चाहता है । शिशु के मनोरंजन के ऊपर सर्वदा ध्यान रखना चाहिए ।

३ शिशु के लिये शुद्ध वायु और मूल्य किरण चाहियें ।

४ शिशु के लिये मातृ दुग्ध अमृत है । उस का त्याग और, पानीय शुद्ध, हल्का और बल वर्द्धक होना चाहिये ।

५ शिशु को अच्छी आदतों के आधीन करना चाहिये ।

६ शिशु का वजन तोलना चाहिये ।

७ सर्वदा उसे साफ सुथरा रखना चाहिये ।

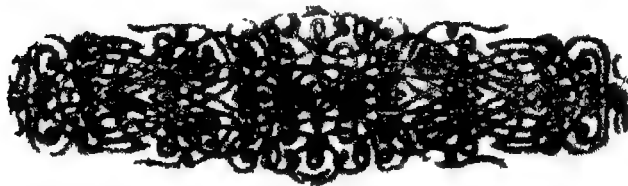
निहालाना, मुख, दांत, केश, नाखून और चर्म परिष्कार रखना चाहिये ।

८ शिशु के वस्त्रादि साफसुथरे ऋतु अनुसार हलके, ऊनी, सूती आदि होने चाहिए । भारी जेवर, वस्त्र और अत्यधिक आभूषणों का आवश्यकता नहीं है । वस्त्र शरीरोपयोगी न ज्यादा ढीला अथवा तंग हो । रोजाना कपड़े बदल देना चाहिए टट्टी पेशाब से सने हुए कपड़ों में बच्चे न रहने पावें । इन दस नियमों को ध्यान देकर शिशु का पालन किया जावे तो आशा है मानाओं को शिशु वियोग और रोगग्रस्त शिशुओं के लिए दुःख उठाना नहीं पड़ेगा ।

भारत के हर प्रांतमें शिशुशालाओं और शिशु पालन सम्बन्धी शिक्षा संस्थाओं का आवश्यकता है । जन साधारण और सरकार दोनों का इस ओर ध्यान देना चाहिए ।

अब मैं नुद और अधिक कुछ शिशुपालन के बारे में लिखकर शिशुपालन और शिशु रोगों के बारे में विद्वान लेखकों के लेखों की तरफ पाठकों का ध्यान दिलाती हूँ । मुझे आशा है इस विशेषाङ्क की विशेषता से सर्व साधारण लाभ उठायेंगे ।

—डा० कुन्तलकुमारी देवी



## अनुभूत प्रयोग

### नं० १ बच्चों की घुट्टी—

यदि कब्ज हो तो बनफशा, मनाय, अमलतास का गूदा हर एक तीन माशा बड़ी हैड़, छोटी हैड़, बायबिड़ंग, वावमुम्बा, गुलाब का फूल हर एक दो माशा, दाख उन्नाव, हर एक ३ दाने १० तोला पानी में भिगो कर २, ४ उवाल देंगे, छानकर थोड़ी सी तुम्जवीन और घूरा मिलाये, दिन में २, ३ बार कपड़े की वस्ती से चुसाये।

### नं० २ जन्म घुट्टी—

सौंफ मा० १, गुनका दा० १, बायबिड़ंग, नाकमु, नर कचूर, वकल हैड़ बड़ी, गुलाब का फूल, मनाय, हर एक १ माशा उन्नाव दा० १ अमलतास का गूदा मा० ६ (यदि बच्चे को तीन दस्त से अधिक आवें तो इस घुट्टी को देना बन्द कर दें)

नं० ३—(बाज बच्चों में पैदा होने से दूसरे से पांचवें दिन तक कामला (आंखें पीली होना) रोग हो जाता है। यदि यह हल्का सा हो तो दो तीन दिन में स्वयं ही जाना रहता है नहीं तो उसकी माता को ये दवाइयां पिलानी चाहियें। (A) अर्क मकोथ ५ तो० अर्क कासनी ५ तो० शर्बत अनार ३ तो० मिलाकर प्रातः व सायंकाल पिलावे। १०, १० बूंद शर्बत दीनार बच्चे को चटाये।

(B) कसौदी की १ पत्ती मां के दूध में पीसकर बच्चे को पिलावे।

(C) यदि कब्ज होवे तो पहले अरंडी का

तेल मांश २ मां के दूध में मिलाकर पिलावे बाद में हाइड्रोजराई कम कंटा १ प्रेन, सोडा बाई कार्ब २ प्रेन, फ्लुगियाई कम्प० २ प्रेन इसकी १ पुड़िया बनावे। पेसी १-१ पुड़िया सुबह शाम मां के दूध में मिलाकर बच्चे को पिलावे।

नं० ४—बच्चे की नाभि फूटा Umbilical Hernia जिसमें नाक बाहर की उभर आती है। प्रयोग—कपड़े की १ गद्दी रखकर बारीक रबड़ की पट्टी से लपेट दें। या शीश का बुरादा या मुरमा पोटली में बांधकर फूली हुई नाभि पर रख के कपड़ा या रबड़ की पट्टी लपेट दें। यह प्रयोग ३, ४ महीने तक बराबर जारी रखे।

### नं० ५—बच्चे का नाभिशाथ

नाल काटने के बाद यदि बच्चे की नाभि पक जावे तो उसे नीम के पानी या कार्बोलीक लोशन से धो दिया करें और यह लेप करें, मुरदासंग, सेंदूर, सेलखड़ी इन्हें सुर्मे के मानिन्द बारीक पीसकर तेल से जकूम पर छिड़क दें। बच्चे को कब्ज न होने दे।

### नं० ६—बच्चे की आंख दुखना।

प्रयोग, एक रत्ती फिटकरी २॥ तोले गुलाब के अर्क में घोलकर १, १ घून्ट दिन में दो तीन बार डालें। और आंख के चारों तरफ गिलेअरमनी फिटकरी, छोटी हैड़, सेंहदी के पत्ते हर एक २ मांशे, अफीम १ रत्ती मां के दूध में पीस कर लेप करें।

## नं० ७—बच्चों की खांसी—

काकड़ासिंगी बहुत चागीक पीसकर थोड़े शहद में मिलाकर दिन में कई बार करके बच्चे को चटावे। अगर कब्ज और सीने पर बलरामव हुत हो तो गुलचनकशा, मुल्हत्तो, गाजुवां, सौक, हंसराज, १-१ मा० मवीज मुनक्का दो दांते, अंजीर चौथाई दा०, खत्मी, खुन्वाजी १- मा० सबको दो छंटाक पानी में उबान लें। जब चौथाई रह जावे तो छानकर शहद या पुराना गुड़ इसमें मिलाकर थोड़ा थोड़ा पिलावें। यदि बच्चे का पैदावश के वक्त से चालीस राज तक ६ मा० शहद रोजाना चटा दिया करे तो पसला की बीमारी न होगी।

## नं० ८—बच्चों की काली खांसी—

( Whooping cough )

अफीम चार मांशे, जाफ़ान तीन मांशे, बारचीनी ३ मा०, लौक ४ मा०, गुग्गुल ४ मा०, गोलिफताग ४ मा०, जवरमोहरा ४ मा०, काकड़ासिंगी ४ मा०, बारहापिता जला हुआ ४ मा०, सबको चागीक पीसकर पीटदांत के लुआव में बाजरे बराबर गोलियां बनावें। बहुत छोटे बच्चे को एक गोली, उससे बड़े को दो, मां के दूध में या अर्क गाजुवां के साथ दें। अक्सरी है।

## नं० ९—बच्चों की पसला खांसी—

लौक ३ मा०, दन्तुर्नी ३ मा०, पीपल ३ मा०, खवतार ३ मांशे, जदवार ३ मांशे, चोक ३ मा०, मुहागा भुना हुआ ३ मांशे सबको लेकर शहद में घोटकर बाजरे बराबर गोलियां बनावें। दो रत्ती गोलियां मां के दूध में घोलकर दें, ज्यादा बड़े बच्चे को उसकी उमर के मुताबिक।

## नं० १०—बच्चों की छाती पर बलराम बोलना—

इसमें रोगनवाहम में मोम डाल कर पिघलाकर छाती पर मालिश करें।

## नं० ११—बच्चों की पसली ( टस्का )—

अमलनास का गूदा मांशे ३, कुड़े की छाल मांशे ३, चिसांदू के बीज लग २, चिड़ियों की बीट लग ४, इस तोला पानी में उबालें जब ठोढ़ तोला रहे छानकर १ तोला शहद मिलावे। दिन भर में ३-४ बार करके पिलावें।

( अनुभूत आयुर्वेदचार्म १० देवकीनन्दन भस्मा देहली )

## नं० १२—बच्चे की पित्तकां—

बच्चे की वदहज्मी का डलाज करे, गहने तक पाना में बिठावे। अर्क सौक, अर्क पीसीना या अर्क सोया थोड़ा थोड़ा मिलावें। सोर के पंख का चन्दा जवाहर तैथाई रक्ते का शहद में मिलाकर चटावें।

## नं० १३—बच्चे को ज्यादा प्यास लगना—

इसमें वंशलोचन ६ मांशे, कमलगट्ट की गिरा १ तोला इसको एक मिट्टी के बर्तन में आवपाव अर्क गाजुवां में भिगो दें इसी में से जरा जगमा मिलाते रहें।

## नं० १४—बच्चे का पेट अफरना—

अरंडी के तेल में २-४ बून्द तारपीन का तेल मिलाकर पेट पर चुपड़ दे और रुई से हल्का हल्का सेकें। सौंफ, तरकचूर, कालीहड़ हर एक ४ मांशे, मुहागा भुना हुआ १ मांशे, १ रत्ती हींग सबका पीसकर अदरक के पानी में मूंग बराबर गोलियां बनावें। एक गोली दिन में २-३ बार दें।

## पुस्तक परिचय

### (१) पञ्चभूत विज्ञान—

मूल संस्कृत और हिन्दी भाषानुवाद सहित, नास्तर २० x ३० १६ पेजी, पृष्ठ संख्या ३१० पुस्तक की छपाई बरौदा प्रशंसनीय है। मूल्य २) प्रणेता और प्रकाशक आयुर्वेदिक एण्ड यूनानी मेडिकल कॉलेज देहली के सीनियर प्रोफेसर, आयुर्वेद के प्रकाण्ड पंडित कविराज श्री उपेन्द्रनाथ दास जी भिषगाचार्य काव्य, व्याकरण, सांख्य तीर्थ, सांख्य सागर मंदिर धाजार (देहली)। यद्यपि आयुर्वेद साध के भित्ति स्वरूप पञ्चभूतों का वर्णन करक सुश्रुत आदि आयुर्वेदों तथा पुराण, दर्शन वेदों में विद्यमान होते हुये भी उन २ पञ्चार्थों के मत भेद तथा प्रकारान्तर से विशेष ज्ञान करने के कारण अब कृ. दिन से पाश्चात्य वैज्ञानिक साधनाय इस पाश्चात्ताव सिद्धान्त की कपोल काल्पना एवं अवैज्ञानिक बता कर इसका शूलोच्छेद करना चाहते हैं। उमा पञ्चभूत के स्वरूप निर्णयार्थ गत नवम्बर मास में पुण्य क्षेत्र बनारस में एक पञ्चभूत पंच विद्वत् सम्मेलन हुआ था, इस सम्मेलन में पञ्चभूत पर जितने भी आलोचकों ने प्रश्न किये वे सब प्रश्न २० प्रश्न विचारार्थ सम्मेलन में पेश किये गये थे। उन्हीं प्रश्नों का लक्ष्य कर श्री कविराज जी ने प्रस्तुत पुस्तक में अपनी बकाय युक्ति व तर्क द्वारा प्रमाणों सहित पञ्चभूतों का स्वरूप निर्णय करते हुये आधुनिक विज्ञान वाद से साधु तुलना की है, और स्थान २ पर पाश्चात्य वैज्ञानिक सिद्धान्तों की अपूर्णता व अस्थिरता को दिखाय है, निःसन्देह इस पुस्तक में पाश्चात्ताव जैसी गूढ़ सिद्धान्त को ऐसा सरल हिन्दी भाषा द्वारा समझाया गया है, कि जिससे इस एक ही पुस्तक को पढ़ने के बाद पञ्चभूत विषयक ज्ञान में अन्य पुस्तक देखनेकी आवश्यकता नहीं रहती। वैद्यबन्धु

तथा विद्वान् पाठकों से हम अनुरोध करते हैं कि वे इस अभूत पूर्व रचना से लाभ उठाकर कविराज जी के परिश्रम को सफल करें।

### त्रिदोष विज्ञान—

इसके भी रचयिता, प्रकाशक, साइज, छपाई वगैरा सब उपरोक्त पञ्चभूत विज्ञानवत् ही है। केवल भेद इतना है कि इसकी पृष्ठ-संख्या २०० और मूल्य १।। है। आयुर्वेद के आधार भूत त्रिदोष सिद्धान्त पर आधुनिक वैद्यों ने भी त्रिदोष के स्वरूप, गुण, धर्मादि के विषय में कितने विरुद्ध मत मतान्तरों की सृष्टि करवा ली है, यह बात आयुर्वेदज्ञों से छिपी नहीं है, उन आलोचकों का निराकरण करके त्रिदोष का सिद्धान्तः स्वरूप, गुण, धर्मादि सिद्ध करने के लिये काशी विद्वत्सम्मेलन में जो विचार्य विषय रखे गये थे उन्हीं को लक्ष्य कर कमशः यह पुस्तक लिखी गई है, प्रस्तुत पुस्तक में विद्वान् लेखक ने दर्शन और विज्ञान की सहायता से सिद्धान्ताभास विरुद्ध मत मतान्तरों का खण्डन करके त्रिदोषवाद के सिद्धान्त को इस प्रकार सरल और सरल गभित युक्तियों से वर्णित किया है जिनको समझ लेने के बाद त्रिदोषवाद में सन्देह करने का अवकाश ही नहीं रहता, परन्तु इस पुस्तक को पढ़ने से पूर्व पञ्चभूत विज्ञान को अवश्य पढ़ लेना चाहिये, हमारी सम्मति में इन दोनों पुस्तकों को आयुर्वेद विद्यालयों के पाठ्यक्रम में रखना चाहिये, स्तोत्र प्रायः अर्ध शिक्षित वैद्य व छात्र ही आधुनिक विज्ञान से मोहित होकर आयुर्वेद के सिद्धान्तों को उपेक्षा करने लगते हैं। हम कविराज जी की इन दोनों अपूर्व रचनाओं का हृदय से स्वागत करते हैं और अपने शिष्यागणों से अनुरोध करते हैं कि वे कम से कम एक बार आपकी इन दोनों पुस्तकों को संग्रह कर अवश्य पढ़ें।

—सन्धावक

## निवेदन

प्रिय पाठक गण !

आज हम उस परम पिता जगन्नियन्ता भगवान् की कृपासे जीवन सुधा का यह “शिशुरोग-विज्ञान” आपके कर कमलों में उपस्थित कर रहे हैं। हमारी उत्कट इच्छा थी कि हम इस विशेषाङ्क को और भी सर्वाङ्गपूर्ण एवं सुन्दर सुपाठ्य ठोस सामग्री से परिपूर्ण करते परन्तु विशेषाङ्क का कलेवर बढ़ जाने के भय से फिर भी इसको सफल एवं उपयोगी बनाने के लिये निरन्तर परिश्रम करके जो कुछ हम तैयार कर सके हैं वही आपकी भेंट करते हैं।

सब से प्रथम हम अपने कृपालु श्रद्धेय माननीय श्री० डा० त्रिलोकीनाथ जी वर्मा सिविल-सर्जन महोदय के अत्यन्त आभारी हैं जिन्होंने अपने अमूल्य चित्रों को देकर इस विशेषाङ्क के सुन्दर बनाने में बड़ी सहायता दी है, और साथ ही हम अपने आज्ञस्वी लेखक महोदय श्री० डा० वेदव्यास दत्त जी शर्मा शास्त्री तथा श्रीमता डाक्टर कुन्तलकुमारी जी देवी के अत्यन्त अनुगृहीत हैं। जिन्होंने हमारी प्रार्थना पर अपना अमूल्य समय देकर इस विशेषाङ्क का सम्पादन कार्य भार स्वीकार कर अपनी अमृतमयी रचनाओं से इसे विभूषित किया है। इसी प्रकार हम अपने कृपालु लेखक श्री डा० कन्हैयालाल जी जैन मैडिकल आफिसर children free dispensary काजीर्हाब देहली महोदय का अत्यन्त धन्यवाद करते हैं कि जिनका कृपा से ही हमें स्थानीय योग्य डाक्टर महोदयों की अमूल्य रचनाएँ प्राप्त हुईं और अन्त में हम अपने कृपालु श्रद्धेय लेखकों को भी नहीं भूल सकते कि जिन्होंने अपने अमूल्य लेख भेज कर इस विशेषाङ्क को सुन्दर सुपाठ्य रचनाओं से पूर्ण किया है, परन्तु फिर भी हम अपने कृपालु लेखकों से एक नम्र निवेदन करना चाहते हैं कि हमने विशेषाङ्क का विषयसूची में यह लिख दिया था कि जो लेखक महोदय जिस विषय पर लिखना स्वीकार कर वे उन विषयों की सूचना दे दें ताकि शेष विषयों को भी पूरा कर दिया जावे परन्तु लेखक वर्ग ने हमारे निवेदन पर ध्यान नहीं दिया। फल यह हुआ कि एक ही विषय पर कई लेखों के आने से पुनरावृत्ति हो गई। किसी किसी महानुभाव ने सभी विषयों पर थोड़ा २ लिख दिया। इसलिये हम सम्मानास्पद लेखक मंडल से नम्र निवेदन करते हैं कि वे अपने लेखों में मौलिकता व अनुभवपूर्ण खोजों का ही अवश्य ध्यान रखें, केवल ग्रन्थानुवाद से काम नहीं चल सकता। अन्त में मैं अपने माननीय लेखक वर्ग तथा कृपालु प्राहकों से सविनय निवेदन करता हूँ कि वे भविष्य में भी तदा स्नेह पूर्ण दृष्टि रखेंगे। तथा विशेषाङ्क के विस्तार के भय से जिनकी अमूल्य रचनाएँ हम नहीं छाप सके हैं उनके लेख भविष्य में अवश्य छापे जावेंगे।

सम्पादक भगवद्दत्त शर्मा

# THE DHARMARAJYA

Illustrated Weekly.

The only first-rate journal of the capital  
of India devoted to Hindu Religion,  
Culture & Civilization Conducted

**UNDER THE SPIRITUAL GUIDANCE**

OF

**H. H. Shri Jagadguru Shankarcharya  
Maharaj of PURI.**

It is the **BEST MEDIUM** for **ADVERTISING**  
*SWADESHI MANUFACTURES.*

**KINDLY ASK FOR THE RATES.**

*Price per Copy*

*One Anna*

*For further particulars please write to:-*

*The General Manager,*  
**THE DHARMARAJYA ILLUSTRATED WEEKLY,**  
MANGAL BUILDINGS, Behind The  
Lloyd's Bank, Chandni Chowk,  
**DELHI.**

**INSURE**

**YOUR  
LIFE  
WITH**

**The Commonwealth Assurance Co., Ltd.  
OF  
POONA**

**Wanted**

**INFLUENTIAL & ENERGETIC  
AGENTS ON SALARY  
AND COMMISSION**

*For particulars please write to:-*

*The Secretary.*  
**The Commonwealth Assurance Co., Ltd.**  
Chandni Chowk  
DELHI.

# सिद्ध सालव पाक रसायन

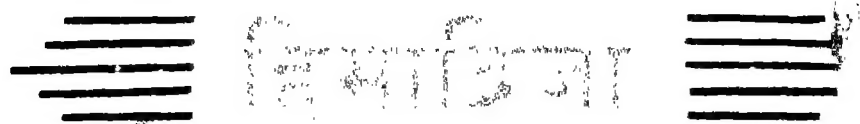
( रजिस्टर्ड )

यह रसायन बाल्य-सम्बन्धी सब दोषों को दूर करके उसे शुद्ध पुष्ट एवं सन्तानोत्पत्ति के योग्य प्रभावित करता है। श्वेत दोषों के रोग से आक्रान्त होकर जिन बच्चों के रक्त, रक्त मांस शुक्रादि सम्पूर्ण श्वेत तालाव हाँस रहे हैं तथा बाल के पतला होने से स्वतन्त्र शीघ्रपन, उन्मत्त की शिथिलता, परपन्थानि, अधिक शुक्रपान तथा श्वेतमद्गादि रोगों के कारण से उन्मत्त मुख रहित वंशलोप का आशङ्क से समय व्यतीत कर रहे हैं, उन्हें इस रसायन का सेवन करना सभार मुख एवं सन्तानोत्पत्ति के लिए अनाथ सम्बन्धकारी होगा। यह दवा औषधि वृद्ध पुरुषों को भी युवा तुल्य शक्तिमान बना देता है। यदनाम की बड़ी ताकत देता है। इस कारण उन लोगों के लिए जिन्हें दिमागी काम करना होता है उसका दोस्तरों, बकालों, मास्टरों, कायियों, विद्याश्रियों कलकों एवं पत्र-सम्पादकों, या यन्त्रज्ञान या कला का बहुत सुखकारी वस्तु है। हर तरह की शिथिलता को दूर करने वाली एक रसायन। न्यायिण नृपति स्वर्गक है। मुख्य एक सेर ५ रु० १ पाव का डिब्बा २ रु०

# सिद्ध मुपारीपाकरसायन

( रजिस्टर्ड )

यह दवायण १०० वहमूल्य दवाओं से तैयार होता है। यानि रोगों को दूर करने में इसके समान दूसरा औषधि नहीं है। यह दवा बाल्य या यानि रोगों की रचना करने में लाचार होता है। जिन्हें रोग रहने का आशङ्क होता है, जो रक्त-मज्जा में लज्जित और दुर्गन्ध होता है, जिन्हें अपनो जिन्दगी भर मालूम होता है, जो सन्तान के लिए रात दिन कुत्ता और तर्कता की आज्ञा बड़ी सामान्यवर्ती देविया हमारे सिद्ध मुपारी पाक रसायन के उपयोग कर रहे हैं। जिससे सेवन से वे श्वेत-दर, रक्त-दर, मांसिक-रक्त की अनियमितता, बार-बार रोगों की गिरता बालक हाँसकर मर जाना तथा एक बार बालक होकर फिर न होना, रोगों का बोझारी हिस्टोरिया, शारीरिक शिथिलता, दुर्बलता, स्मि, कभर नलों का दूध, स्मि का घमना चेहरे का फाकापन आदि अनेक रोगों का उन्मत्त से दूरकर स्वस्थ और पुष्ट होकर कई र बालकों की माताएँ बन गई हैं। इसके सिवाय जापे की बोझारी, बुढ़ापे की कमजोरी में बड़ा मुफ्त है। मुख्य एक सेर ७ रु० १ पाव का डिब्बा २ रु०



## रक्त विकार की अचूक औषधि

हिमालय पर्वत की उन दुर्गम चोटियों की ३ हज़ारों मन बर्फ़ से ढकी रहती हैं, एक विशेष जड़ी पाई है। प्राचीन काल से ऋषि मुनि इस औषधि का प्रयोग करते आये हैं। १२० वर्ष हुए जब हमें पहले पहल २ वृद्धी एक पहाड़ी रियासत के राजा साहिब की कृपा से प्राप्त हुई थी। तब से आज तक लाखों रोगियों पर इसे आजमाया गया और हमेशा गुणकारी पाया है।

के कारण पैदा हुये तमाम रोगों की एक मात्र अचूक दवाई है। एक पैकेट सात दिन के लिये काफी है। कीमत १ पैकेट केवल १) डाक व्यय पृथक्।

---

बृहत् आयुर्वेदीय औषध भाण्डार, चांदनी चौक, देहली

